SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रहरी

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

वर्ष : 36 अंक : 72 वाँ संयुक्तांक (अक्टूबर 2024- मार्च 2025)

बिहार कोकिला **'श्रीमती शारदा सिन्हा'** (प्रसिद्ध भारतीय गायिका)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना

प्रहरी परिवार

डॉ. संदीप रॉय
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

श्री अजय कुमार झा
वरिष्ठ उपमहालेखाकार

श्री शिव शंकर
वरिष्ठ उपमहालेखाकार

श्री ओंकार
वरिष्ठ उपमहालेखाकार

श्री सुजय कुमार सिन्हा
उपमहालेखाकार

श्री पीयूष कुमार राय
उपमहालेखाकार

श्री राकेश रौशन
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री दिवाकर राय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री सुजीत कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री मनोज कुमार नं.1
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री राजू कुमार सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री शंकरा नन्द झा
सहायक निदेशक (राजभाषा)

श्री दिलीप कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

श्री रवि प्रभात
कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री अर्कजा आकृति
कनिष्ठ अनुवादक

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रहरी

कार्यालयीन त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

72वाँ अंक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना
महालेखाकार भवन
बीरचन्द पटेल मार्ग, पटना-800 001

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रहरी

त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका

वर्ष : 36 | अंक : 72 वाँ | संयुक्तांक (अक्टूबर 2024-मार्च 2025)

प्रहरी परिवार

संरक्षक

डॉ संदीप रॉय
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना

परामर्शी

श्री अजय कुमार झा	वरिष्ठ उपमहालेखाकार
श्री ओंकार	वरिष्ठ उपमहालेखाकार
श्री शिव शंकर	वरिष्ठ उपमहालेखाकार
श्री सुजय कुमार सिन्हा	उपमहालेखाकार
श्री पीयूष कुमार राय	उपमहालेखाकार
श्री राकेश रौशन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री दिवाकर राय	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री सुजीत कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादक मंडल

श्री मनोज कुमार नं.1	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (संपादक)
श्री राजू कुमार सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री शंकरा नन्द झा	सहायक निदेशक (राजभाषा)
श्री दिलीप कमार	कनिष्ठ अनुवादक
श्री रवि प्रभात	कनिष्ठ अनुवादक
सुश्री अर्कजा आकृति	कनिष्ठ अनुवादक

स्वत्वाधिकार : प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना
प्रकाशन : प्रहरी
प्रकाशक : राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना
आवरण पृष्ठ : पद्मविभूषण शारदा सिन्हा की तस्वीर
साज-सज्जा : पटना स्टेशनर्स, बोरिंग रोड, पटना-1 मो0-9835055772
मूल्य : राजभाषा हिंदी की निरंतर सेवा

इस पत्रिका में संकलित रचनाओं में रचनाकार के विचार अपने है। उनसे प्रहरी परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
✍ संपादक

साभार: पत्रिका में प्रकाशित कुछ चित्र गूगल साइट से लिये गये हैं। इसका उपयोग गैर व्यवसायिक है।

इस अंक में

रचना	विधा	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
संदेश		डॉ. संदीप रॉय	6
संदेश		अजय कुमार झा	7
संपादन की कलम से		मनोज कुमार	8
सुप्रीम ऑडिट इंस्टीट्यूशन (साई) भारत के अंतरराष्ट्रीय कार्य	लेख	गौरव कुमार महतो	12
राजभाषा हिन्दी: चुनौतियाँ और संभावनाएँ	लेख	संजीव कुमार	16
प्रेम, सौंदर्य, उल्लास और वीरता का आगमन वसंत	लेख	मनोज कुमार	18
स्वस्थ तन में ही रह सकता हैं स्वस्थ मन	लेख	शिव शंकर राय	20
अपना बिहार	कविता	कुमार शैलेन्द्र चन्द्र	21
जुड़ते पैसे, बिखरते रिश्ते	लेख	रूपेश कुमार सिंह	22
तनाव को कम करता है मही देना	लेख	सतीश चंद्रा	27
परमात्मा का साक्षात्कार	लेख	कुमारी पल्लवी	28
बदलते पर्यावरण में कृषि पद्धतियों और तकनीकों में बदलाव	लेख	सत्य प्रकाश सिंह	30
बिहार कोकिला–शारदा सिन्हा	लेख	शंकरा नंद झा	33
शेयर बाजार और मेरा अनुभव	लेख	विकास कुमार	35
सेवानिवृति के बाद का जीवन उल्लासपूर्ण और स्वस्थ कैसे हो	लेख	सुधीर कुमार	36
बरगद	कविता	श्यामदत्त मिश्रा	37
प्रभु तरू तर, कपि डार पर	लेख	जय प्रकाश मल्ल	39
नालंदा जिले के प्रमुख पर्यटक स्थल: एक परिचय	लेख	आदित्य शरण कौशलेश	40
गंगा के दियारा के विकास और उपयोग की संभावना	लेख	भूषण प्रसाद	42
कास्टिज्म अपनाना चाहता हूँ	कविता	दिलीप कु0 अरोड़ा	44
बढ़ता बचपन	कविता	श्रीमती दिव्या नाथ	44
ध्वस्त पुल	कविता	राजू कुमार सिंह	45
बिहारी शादी की रस्मों के निहितार्थ	लेख	राजू कुमार सिंह	46
नैनीताल की यात्रा–एक यादगार पल	लेख	अनुप्रिया सिह	50
लेखापरीक्षा सप्ताह 2024	फोटो		51
शालीग्रामी गोल्ड कप फुटबॉल ट्रॉफी 2025 की विजेता टीम	फोटो		५२

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार

संदेश

हमें अत्यंत हर्ष और गर्व है कि हमारी कार्यालयीन हिंदी पत्रिका 'प्रहरी' का 72 वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। यह पत्रिका न केवल हमारे अधिकारियों और कर्मचारियों की रचनात्मकता, विचारशीलता एवं अभिव्यक्ति का जीवंत दर्पण है, अपितु हिंदी भाषा और उसकी समृद्ध साहित्यिक परंपरा के प्रति हमारी निष्ठा का प्रतीक भी है।

वर्तमान में, जब विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विस्तार ने कार्यस्थलों पर वैश्विक भाषाओं की उपस्थिति को बढ़ाया है, तब भी हिंदी की महत्ता, उसकी आत्मीयता और उपयोगिता में कोई कमी नहीं आई है। हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, परंपरा और आत्मा की जीवंत अभिव्यक्ति है।

'प्रहरी' के माध्यम से हम हिंदी को सशक्त, प्रासंगिक और समृद्ध बनाने की एक विनम्र पहल कर रहे हैं। इस अंक में प्रस्तुत विविध रचनाएँ जैसे लेख, कविताएँ और अन्य साहित्यिक विधाएँ हमारे कार्मिकों की सृजनशीलता, अनुभव और सोच की स्पष्ट झलक देती हैं।

पत्रिका की सफलता में योगदान देने वाले समस्त रचनाकारों, संपादकीय मंडल और सुधी पाठकों को मैं हार्दिक शुभकामनाएँ एवं धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। आशा है कि यह अंक आपकी अपेक्षाओं पर खरा उतरेगा और हिंदी के प्रति आपकी रुचि को और भी गहराई प्रदान करेगा।

जय हिंद ! जय हिंदी !!

(डॉ. संदीप रॉय)

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन) बिहार, पटना

संदेश

कार्यालयीन हिंदी पत्रिका 'प्रहरी' का 72 वाँ अंक सौंपते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका केवल हमारे कार्यालय के सदस्यों की रचनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम भर नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा सशक्त मंच भी है, जहाँ विचारों, भावनाओं और अनुभवों का साझा किया जाना संभव होता है।

यह पत्रिका हमारी सांस्कृतिक चेतना और भाषा के प्रति उत्तरदायित्व का एक सुंदर प्रतीक है। यह हमें न केवल हिंदी भाषा की गरिमा बनाए रखने की प्रेरणा देती है, बल्कि उसकी साहित्यिक विरासत से जुड़ने का अवसर भी प्रदान करती है।

हम अपने सुधी पाठकों से आग्रह करते हैं कि आप भी अपनी रचनात्मक सहभागिता द्वारा इस प्रयास को और अधिक सशक्त बनाएं। आपके सुझाव, विचार एवं रचनाएँ न केवल पत्रिका को समृद्ध बनाएँगी, बल्कि हमें और भी बेहतर दिशा में कार्य करने की प्रेरणा देंगी। हिंदी केवल हमारी भाषा नहीं, बल्कि हमारी पहचान है। इसे सशक्त बनाना हमारा कर्तव्य है। आइए, हम सब मिलकर हिंदी को उसकी गरिमा और महत्त्वपूर्ण स्थान बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध हों।

अजय झा

(अजय कुमार झा)

सम्पादकीय

एक आत्मीय विदा

कॉलेज के दिनों से ही मेरा झुकाव साहित्य की ओर होने लगा था। वे दिन कवि गोष्ठियों में सक्रिय सहभागिता करने और मुंशी प्रेमचंद, फणीश्वरनाथ रेणु, रामधारी सिंह 'दिनकर', हरिवंश राय 'बच्चन', सुमित्रानंदन 'पंत' और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जैसे महान साहित्यकारों की रचनाओं में डूबने के थे।

जब मैंने सरकारी सेवा में प्रवेश किया, तब महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना की कार्यालयीन पत्रिका 'प्रहरी' के संस्थापक-संपादक, आदरणीय श्री सिद्धेश्वर प्रसाद जी के स्नेह व प्रेरणा से वर्ष 1994 में 'प्रहरी' के पाँचवें अंक से संपादकीय मंडल में शामिल हुआ तब से 72वें अंक तक 'प्रहरी' के संपादन और उसकी निरंतरता में मैंने समर्पित रूप से योगदान दिया। (रांची कार्यालय में दो वर्षों के कार्यकाल को छोडकर) यद्यपि कार्यालयीन कार्यभार और लेखापरीक्षा जैसी जिम्मेदारियाँ हमेशा बनी रहीं, परंतु 'प्रहरी' का संपादकीय दायित्व एक ऐसा कार्य रहा जो मुझे आत्मिक संतोष और अपार हर्ष प्रदान करता रहा। इस दौरान पत्रिका के प्रकाशन ने कई उतार-चढ़ाव देखे, किंतु हर चुनौती ने मुझे और अधिक प्रतिबद्ध बनाया। इन वर्षों में 'प्रहरी' ने न केवल आकार में, बल्कि विचार में भी परिपक्वता प्राप्त की। कई विशेषांक निकाले गए, स्वर्ण जयंती अंक, बिहार पर्यटन अंक इत्यादि। कई नवोदित रचनाकारों को मंच मिला। मैंने कई पूर्व संपादकों से नयी नयी बातें सीखी। श्री सिद्धेश्वर प्रसाद, उदय चंद्र झा 'विनोद', जय प्रकाश मल्ल, शिव शरण सिन्हा, सूर्यबली चौधरी इनमें प्रमुख हैं। यह पत्रिका मेरे लिए केवल कार्यालय की एक जिम्मेदारी नहीं रही, बल्कि आत्मा की अभिव्यक्ति बन गई थी। प्रत्येक अंक मेरे हृदय का स्पंदन था।

कंप्यूटर और मोबाइल क्रांति ने जहां एक ओर राजभाषा हिन्दी के प्रसार और प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, वहीं दूसरी ओर इस तकनीकी युग ने कार्यालय की रचनाधर्मिता को कुछ हद तक प्रभावित भी किया है। विगत चार-पाँच वर्षों में 'प्रहरी' को साहित्यिक रचनाओं की कमी का अनुभव करना पड़ा है। ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ नवोदित रचनाकारों की सृजनात्मक ऊर्जा अत्यधिक रूप से मोबाइल और सोशल मीडिया पर केंद्रित हो गई है। साथ ही, कार्यालयीन पत्रिकाओं के ई-संस्करणों की ओर बढ़ते रुझान ने भी कुछ हद तक पाठकों और रचनाकारों की रुचि को कम किया है। हालाँकि, अब पुनः पत्रिका की मुद्रित प्रतियों का प्रकाशन आरंभ होने से एक नई ऊर्जा और उत्साह का संचार हुआ है, जिससे रचनात्मक योगदान के प्रति आशा जगी है।

राजभाषा विभाग, भारत सरकार का एक महत्त्वपूर्ण अंग है, जिसकी स्थापना भारतीय संविधाान के अनुच्छेद 343 के अंतर्गत हिंदी को राजभाषा के रूप में लागू करने और उसे प्रोत्साहित

करने के उद्देश्य से वर्ष 1975 में की गई थी। इस विभाग ने वर्ष 2025 में अपनी स्थापना के 50 गौरवपूर्ण वर्ष पूर्ण किए हैं, जो न केवल हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार का प्रतीक है, बल्कि भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था में भाषाई समरसता की एक मिसाल भी है।

पिछले पाँच दशकों में राजभाषा विभाग ने अनेक योजनाओं, नीतियों और कार्यक्रमों के माध्यम से हिंदी के प्रयोग को सशक्त किया है। कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए त्रिभाषी सूत्र, अनुवाद प्रशिक्षण, पुरस्कार योजनाएँ, हिंदी कार्यशालाएँ, और तकनीकी विकास के क्षेत्र में हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देने जैसी पहलें की गई हैं। इसके साथ ही विभाग ने अन्य भारतीय भाषाओं के सम्मान और सहयोग के साथ हिंदी के विकास का मार्ग प्रशस्त किया है।

तकनीक के इस युग में राजभाषा विभाग ने डिजिटल माध्यमों में भी हिंदी को सशक्त बनाने के प्रयास किए हैं। वेबसाइटों, सरकारी ऐप्स और ई-गवर्नेंस में हिंदी का समावेश, भाषा की समकालीन प्रासंगिकता को दर्शाता है। राजभाषा विभाग के 50 वर्ष केवल एक कालखण्ड नहीं हैं, बल्कि यह उस निरंतर प्रयास की कहानी है जो भारत को भाषाई रूप से अधिक समावेशी, सक्षम और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में उठाया गया कदम है। यह विभाग केवल हिंदी के प्रचार तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह एक सेतु बना है। केंद्र और जनता के बीच संवाद को सरल और सुलभ बनाने का। भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा देश के विभिन्न नगरों में आयोजित किए जा रहे हिन्दी सम्मेलन अत्यंत सराहनीय पहल हैं। ये प्रयास निश्चित ही राजभाषा हिन्दी को लोकप्रिय बनाने, उसकी गरिमा को स्थापित करने और जन-जन तक पहुँचाने में एक प्रभावी भूमिका निभाएँगे।

समय के अविराम प्रवाह में एक और मोड़ आ पहुँचा है। आज जब मैं इस माह सेवा से निवृत्त हो रहा हूँ, तो मन अनेक भावनाओं से भर उठा है। अनेक चित्र उभर रहे हैं। पत्रिका संपादन का यह उत्तरदायित्व केवल एक प्रशासनिक दायित्व नहीं था, बल्कि यह मेरे लिए आत्मा की अभिव्यक्ति और रचनात्मक ऊर्जा का सजीव माध्यम था। यह मेरा सौभाग्य रहा कि मैंने प्रहरी के साथ एक लम्बी, सार्थक और आत्मीय यात्रा की । आज, जब मैं यह अंतिम सम्पादकीय लिख रहा हूँ, तो मन में संतोष है कि मैंने इस दायित्व को पूरी निष्ठा, आत्मीयता और समर्पण के साथ निभाया।

मैं हृदय की गहराइयों से उन सभी रचनाकारों, सुधी पाठकों, संपादक मंडल के सहयोगियों, सामान्य अनुभाग, राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष, पत्रिका के संरक्षकगण एवं परामर्शदाताओं क प्रति आभार प्रकट करता हूँ, जिनके निरंतर सहयोग और मार्गदर्शन से 'प्रहरी' अपनी साहित्यिक यात्रा में निरंतर अग्रसर रही। मैं कलम को विराम नहीं दे रहा हूँ, केवल कार्यालयीन भूमिका से मुक्त हो रहा हूँ। साहित्य मेरी आत्मा है, और 'प्रहरी' उसमें सदा जीवित रहेगी।

अंत में, यही हार्दिक कामना करता हूँ कि 'प्रहरी' यूँ ही साहित्य और संस्कृति की प्रहरी बनी रहे, नई पीढ़ियों को प्रेरित करती रहे और राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में एक सशक्त मंच बनी रहे। संपादक मंडल के सभी सदस्यों एवं रचनाकारों की क्षमताओं से 'प्रहरी' अपनी साहित्यिक उड़ान को और ऊँचाइयों तक ले जाए और राजभाषा हिन्दी की प्रतिष्ठा को नई ऊँचाई प्रदान करे यही मेरी शुभकामनायें हैं। मेरा सहयोग तो हमेशा रहेगा ही। आप सभी के स्नेह और सहयोग हेतु पुनः विनम्र धन्यवाद।

आपका

(मनोज कुमार)

आपका पत्र मिला

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
20, सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज-211001

REGIONAL CAPACITY BUILDING & KNOWLEDGE INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj – 211001

पत्रांक- क्षे.क्ष.नि.ज्ञा.सं.(प्र.)/पत्रिका पावती(132)/2024-25/ ५७१ **दिनांक : 09.01.2025**

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
वीरचंद पटेल मार्ग, पटना

विषयः- हिंदी पत्रिका 'प्रहरी' के 71वें अंक की पावती।

संदर्भः- ईमेल से प्राप्त पत्र दिनांक 06.01.2025

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'प्रहरी' के 71वें अंक की प्राप्ति हुई। इसके हेतु सादर धन्यवाद।

पत्रिका का कलेवर एवं विषय वस्तु अच्छी है। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। विशेष रूप से **'कामकाजी दंपतियों के लिए वरदान-क्रेच', 'गाँव की सिसकी', 'नीली रोशनी के दुष्प्रभाव में फँसती आज की पीढ़ी', 'हिंदी हय हमर मातृभाषा', 'फिर एक बार सृजन की आस है'** एवं **'कैसे काटूं समय'** पठनीय और सराहनीय हैं। पत्रिका में सम्मिलित चित्रकारियां तथा कार्यालयीन गतिविधियों की झलकियां मनमोहक हैं।

पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

09.01.25

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/सलाहकार

कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर
O/o the Principal Accountant General (Audit)-II, Maharashtra, Nagpur-440001

सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिक्रिया/20/2024-25/जा.क्र.192 दिनांक: 17/01/2025

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
कार्यालय- प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा)
बिहार, पटना

विषय:- हिंदी पत्रिका "प्रहरी" के 71वें अंक की प्रतिक्रिया के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "प्रहरी" के 71वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर निम्नलिखित रचनाएँ उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं।

क्रं	नाम	रचनाएँ
1.	श्री मनोज कुमार, व.ले.प.अ.	गाँव की सिसकी
2.	श्री रंजन कुमार, व.ले.प.अ.	प्रकाश क्या है
3.	श्री श्याम दत्त मिश्रा स.ले.प.अ.	फुटपाथ पर
4.	श्रीमती मोनिया रानी, स.ले.प.अ.	कामकाजी दंपतियों के लिए वरदान- क्रेच

पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

(वरिष्ठ उप महालेखाकार/ प्रशासन के अनुमोदन दिनांकित 17/01/2025 से जारी)

भवदीया,

प्रियंका बी. गोस्वामी

PRIYANKA GOSWAMI

हिंदी अधिकारी

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I),
पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, 2, गवर्मेंट प्लेस (पश्चिम),
कोलकाता – 700 001

सत्यमेव जयते

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I),
WEST BENGAL
TREASURY BUILDINGS, 2, GOVT. PLACE (WEST),
KOLKATA-700 001
Ph. (033) 2213-3151/52, Fax (033) 2213-3174
e-mail : agauwestbengal1@cag.gov.in

सं. हिंदी कक्ष/हिंदी पत्रिका/पावती/२५७
दिनांक: १८.01.2025

सेवा में,

हिंदी अधिकारी,
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार, पटना - 800001

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय का पत्रांक - हिं.अ./ले.प./प्रहरी/34/2023-24/259, दिनांक- 06.01.2025 के माध्यम से आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका "प्रहरी" की प्राप्ति हुई। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ सुंदर एवं आकर्षक है। "प्रहरी" में समाहित सभी रचनाएं रोचक, प्रशंसनीय एवं ज्ञानवर्धक है। विशेष रूप से श्री श्याम दत्त मिश्रा की रचना 'फुटपाथ पर', श्रीमती हीरा कुमारी की रचना 'स्वंय', श्री आदित्य शरण कौशलेश की रचना 'नीली रोशनी के दुष्प्रभाव में फँसती आजी की पीढ़ी', श्री जयप्रकाश मल्ल की रचना 'दरकता विश्वास', इत्यादि सराहनीय है। आशा है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका के उतरोत्तर प्रगति की शुभकामनाएं।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी

ಮಹಾಲೇಖಪಾಲರು (ಲೆ. ಮತ್ತು ಹ.) ಕಛೇರಿ, ಕರ್ನಾಟಕ, ಬೆಂಗಳೂರು
ಭಾರತೀಯ ಲೆಕ್ಕಪರಿಶೋಧನೆ ಮತ್ತು ಲೆಕ್ಕಪತ್ರ ಇಲಾಖೆ
महालेखाकार (लेखा एवं हक) का कार्यालय, कर्नाटक,
भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
Office of the Accountant General (A & E), Karnataka
Indian Audit & Accounts Department

सत्यमेव जयते

सं. म.ले.(ले.व.ह.)/हिं.क./2024-25/159 दिनांक :09.01.2025

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार, पटना-800001

विषय: हिंदी गृह पत्रिका **"प्रहरी"** के 71वें अंक की पावती प्रेषण के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित होने वाली हिंदी गृह पत्रिका **"प्रहरी"** के 71वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में शामिल सभी रचनाएँ पठनीय एवं सराहनीय हैं। विशेष रूप से:- सुश्री अर्कजा आकृति का लेख **'ग्लोबल वार्मिंग: पर्यावरण की मौजूदा चुनौती'**, श्री पंकज कुमार सिंह का लेख **'नागालैंड यात्रा'**, श्री प्रशांत प्रखर का लेख **'कैसे कांटू समय'**, श्री श्याम दत्त मिश्रा की कविता **'फुटपाथ पर '**, श्री रामौतार प्रसाद की कविता **'भूला नहीं पाता हूँ'** प्रशंसनीय हैं। कार्यालयीन गतिविधियों का छायाचित्र देख कर प्रसन्नता हुई।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

Digitally signed by
Uday Pratap Singh
Date: 13-01-2025 15:05:11

(उदय प्रताप सिंह)
हिंदी अधिकारी

P.B. No. 5329/5369, PARK HOUSE ROAD, BENGALURU 560 001
Tel: 080-22379335 Fax: 080-22264691
https://cag.gov.in/ae/karnataka/en

आपका पत्र मिला

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)का कार्यालय
केरल, तिरुवनंतपुरम - 695 001

OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-II)
KERALA, THIRUVANANTHAPURAM - 695 001

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सं.लेप.II/हिंदी कक्ष/पत्रिका/2024-25 दिनांक : 08-01-2025

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
वीरचंद पटेल मार्ग, बिहार,
पटना - 800001

विषय:- पत्रिका की पावती – बाबत्

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "प्रहरी" के 71 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद । इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। विशेषकर श्री प्रशांत प्रखर द्वारा रचित लेख 'कैसे काटूँ समय', श्री मनोज कुमार नं.-1 द्वारा रचित कविता 'गाँव की सिसकी' तथा श्री रामौतार प्रसाद द्वारा रचित कविता 'भूला नहीं पाता हूँ अत्यंत सराहनीय हैं । सार्थक सामग्री के चयन हेतु बधाई ।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए संपादकीय मंडल को बधाई । पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ ।

भवदीया,

Digitally signed by
S S Kannan
Date: 08-01-2025 15:09:52

हिंदी अधिकारी

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, ओडिशा, पुरी शाखा, पुरी-752003
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), ODISHA, PURI BRANCH, PURI

सं.-प्रशंसा पत्र/09/2024-25/ दिनांक:- 12.02.2025

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार,
पटना-800001

विषय : गृह पत्रिका "प्रहरी" के 71वें अंक के प्रेषण के संबंध मे।

महोदय/महोदया,

आपकी हिन्दी पत्रिका 'प्रहरी' के 71वें अंक की प्राप्ति हुई। धन्यवाद।

"प्रहरी" उत्कृष्ट रचनाओं का सुन्दर संकलन है। पत्रिका के मुख्य पृष्ठ सहित अन्य कार्यक्रमों के चित्र अत्यंत सुखद व अनुभूतिपूर्ण होने के साथ-साथ पत्रिका को और अधिक सुंदरता प्रदान कर रहे हैं। पत्रिका में निहित संपूर्ण रचनाएँ पठनीय, रोचक, ज्ञानवर्धक एवं महत्वपूर्ण संदेशों से परिपूर्ण है। इनमें से "फुटपाथ पर", "दरकता विश्वास", "मिथिला पेंटिंग" और "प्रकाश क्या है" विशेष अच्छी हैं। आशा है कि यह पत्रिका आगे भी अपने रोचक विषयों से पाठकों का ज्ञानवर्धन एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सार्थक मंच उपलब्ध कराती रहेगी।

पत्रिका के संपादक मण्डल के सभी सदस्यों एवं पत्रिका के उज्जवल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

वरिष्ठ लेखा अधिकारी, हिन्दी कक्ष

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल- 462011

क्र.हि.क./फा-7/ जावक - 100 दिनांक 21.01.2025

प्रति,
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार
बीरचंद पटेल मार्ग , पटना-800001

विषय :पत्रिका "प्रहरी" के 71वें अंक की पावती बाबत।
संदर्भ :आपके पत्र सं.हि.अ./ले.प./प्रहरी/34/2023-24/148259 दिनांक 06.01.2025 ।

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा "प्रहरी" के 71वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद । पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है विशेष तौर पर नया नालंदा विश्वविद्यालय, प्रकाश क्या है, महाकाल भस्म आरती का दिव्य दर्शन, यात्रा देवभूमि की-भागीरथी, सार्वजनिक वित्त, आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम हैं। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

प्रफुल

हिन्दी अधिकारी /हिन्दी कक्ष

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT
GENERAL (AUDIT) PUNJAB,
CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
Email-agaupunjab@cag.gov.in

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

क्रमांक- हिं.क./हिंदीपत्रिकासमीक्षा/2024-25/I/853431/2025 दिनांक:21-01-2025

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार-800001

विषय:- 'प्रहरी' के 71वें अंक की समीक्षा।

महोदय,

आपके कार्यालय से प्रकाशित "प्रहरी" के 71 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ सुपाठ्य, बोधगम्य तथा उच्चकोटि की हैं विशेषकर सुश्री अर्कजा आकृति की "ग्लोबल वार्मिंग: पर्यावरण की मौजूदा चुनौती" सुश्री दिव्या नाथ की "फिर एक बार सृजन की आस है" एवं श्री संजीव कुमार की "सरदार वल्लभभाई पटेल और लोकतंत्र" आदि रचनाएँ अत्यंत मनोहर हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुंदर प्रस्तुतिकरण अत्यंत प्रशंसनीय है। राजभाषा हिन्दी की प्रगति की दिशा में पत्रिका का यह अंक एक सराहनीय प्रयास है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ।

भवदीया

EKTA
(हिंदी अधिकारी)

सुप्रीम ऑडिट इंस्टीट्यूशन (साई) भारत के अंतरराष्ट्रीय कार्य

गौरव कुमार महतो
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत का सुप्रीम ऑडिट इंस्टीट्यूशन (साई) वैश्विक ऑडिटिंग कार्यो में, विशेष रूप से संयुक्त राष्ट्र (यूएन) के साथ महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक द्वारा किए गए कई विदेशी कार्यों में से, दो प्रमुख कार्य अक्सर सामने आते हैं- संयुक्त राष्ट्र बोर्ड ऑफ ऑडिटर्स और संयुक्त राष्ट्र के ऑडिटर्स का बाह्य पैनल। अपने समान नामकरण और संयुक्त राष्ट्र ऑडिट के साथ जुड़ाव के कारण, ये दोनों शब्द अक्सर भ्रम पैदा करते हैं। हालाँकि, भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की अंतर्राष्ट्रीय उपस्थिति के लिए उनकी अलग-अलग भूमिकाएँ, उद्देश्य और निहितार्थ हैं। इस निबंध का उद्देश्य दोनों क्षमताओं में साई भारत के योगदान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए संयुक्त राष्ट्र लेखापरीक्षक बोर्ड और संयुक्त राष्ट्र के बाह्य पैनल के बीच अंतर करना है।

यूएनबीओए को समझना: संयुक्त राष्ट्र लेखापरीक्षक बोर्ड

संयुक्त राष्ट्र बोर्ड ऑफ ऑडिटर्स (यूएनबीओए) की स्थापना 1946 में संकल्प 74 (आई) के तहत संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा की गई थी। यह संयुक्त राष्ट्र और इसकी संबद्ध) एजेंसियों के लिए प्राथमिक बाह्य लेखापरीक्षा तंत्र है। बोर्ड में संयुक्त राष्ट्र के विभिन्न सदस्य देशों के तीन सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थान (साई) शामिल हैं, जिन्हें छह साल के कार्यकाल के लिए महासभा द्वारा नियुक्त किया जाता है। ऑडिट प्रक्रिया में पारदर्शिता और निष्पक्षता बनाए रखने के लिए ये साई समय-समय पर घूमते रहते हैं।

- संयुक्त राष्ट्र संगठनों, फंडों और कार्यक्रमों का बाहय ऑडिट आयोजित करता है।
- स्वतंत्र वित्तीय और निष्पादन ऑडिट प्रदान करता है।
- प्रशासनिक और बजटीय प्रश्नों पर महासभा और सलाहकार समिति (एसीएबीक्यू) को रिपोर्ट।
- भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) पूर्व में दो अवधि, जो प्रत्येक 6 वर्ष की थी, के लिए संयुक्त राष्ट्र लेखापरीक्षक बोर्ड के सदस्य रहे हैं जिसका विवरण नीचे दिया गया है: जिसकी अवधि वर्ष 1993 से 1998 और 2014 से 2020 थी।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (सीएजी) 2017 और 2018 के दौरान भी लेखापरीक्षक बोर्ड के अध्यक्ष रहे हैं।

यूएनबीओए की भूमिका और जिम्मेदारियां:

1. वित्तीय ऑडिट:- यूएनबीओए संयुक्त राष्ट्र और इसकी विभिन्न विशिष्ट एजेंसियों के वित्तीय विवरणों के ऑडिट के लिए जिम्मेदार

है, जो अंतरराष्ट्रीय लेखांकन मानकों और वित्तीय नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करता है।

2. निष्पादन ऑडिट:- वित्तीय ऑडिट के अलावा, बोर्ड संयुक्त राष्ट्र कार्यक्रमों और संचालन की अर्थव्यवस्था, दक्षता और प्रभावशीलता का आकलन करने के लिए निष्पादन ऑडिट आयोजित करता है।
3. महासभा को रिपोर्ट करना:- यूएनबीओए अपनी ऑडिट रिपोर्ट संयुक्त राष्ट्र महासभा को सौंपता है, जिसमें वित्तीय अनियमितताओं, जोखिम मूल्यांकन और सुधार के लिए सिफारिशों पर प्रकाश डाला जाता है।
4. जवाबदेही और पारदर्शिता सुनिश्चित करना:-
बोर्ड संयुक्त राष्ट्र प्रणाली के भीतर वित्तीय प्रशासन और जवाबदेही को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक को सार्वजनिक ऑडिटिंग में अपनी वैश्विक विश्वसनीयता का प्रदर्शन करते हुए संयुक्त राष्ट्र लेखापरीक्षक बोर्ड के सदस्य के रूप में कई बार चुना गया है। बोर्ड में सेवा करते समय, भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक संयुक्त राष्ट्र सचिवालय, यूनिसेफ और संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग जैसे विभिन्न संयुक्त राष्ट्र निकायों का ऑडिट करता है।

. संयुक्त राष्ट्र के लेखापरीक्षकों के बाह्य पैनल को समझना संयुक्त राष्ट्र के लेखापरीक्षकों का बाह्य पैनल, संयुक्त राष्ट्र लेखापरीक्षक बोर्ड से एक अलग इकाई है। यह एक ऐसा मंच है जिसमें सुप्रीम ऑडिट इंस्टीट्यूशंस (साई) के प्रमुख शामिल हैं जो विशेष एजेंसियों, फंडों और कार्यक्रमों सहित विभिन्न संयुक्त राष्ट्र संगठनों का ऑडिट करते हैं। यूएनबीओए के विपरीत, जिसमें एक समय में केवल तीन सदस्य होते हैं, बाह्य पैनल में संयुक्त राष्ट्र संस्थाओं द्वारा बाह्य लेखापरीक्षकों के रूप में नियुक्त सभी साई शामिल होते हैं।

. संरचना:-बाहरी लेखापरीक्षकों का एक मंच, आमतौर पर सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों (साई) के प्रतिनिधि के रूप में विभिन्न संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों का लेखापरीक्षा करते हैं। संयुक्त राष्ट्र, विशिष्ट एजेंसियों और अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी के बाह्य लेखापरीक्षकों का पैनल 5 दिसंबर 1959 के महासभा संकल्प 1438 (XIV) द्वारा स्थापित किया गया था। यह निम्न से गठित है:- (ए) संयुक्त राष्ट्र लेखापरीक्षक बोर्ड के सदस्य और (बी) संयुक्त राष्ट्र और अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी की विशेष एजेंसियों के बाह्य लेखापरीक्षक।

अधिदेश:-

. विभिन्न संयुक्त राष्ट्र निकायों के लेखापरीक्षकों के बीच ज्ञान, अनुभव और सर्वोत्तम प्रथाओं के आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान करता है।

. संयुक्त राष्ट्र प्रणाली के भीतर काम करने वाले लेखापरीक्षकों के बीच समन्वय के लिए एक मंच प्रदान करता है।

भारत के सीएजी-बाह्य लेखापरीक्षकों के संयुक्त राष्ट्र पैनल के अध्यक्ष (2020 और 2021) रह चुके हैं ।

वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय लेखापरीक्षा

क्र.सं.	संगठन की अवधि	अवधि	किसने पास था	मुख्यालय
1.	खाद्य एवं कृषि संगठन	2020-25	साई, फिलीपींस	रोम
2.	विश्व स्वास्थ्य संगठन(डब्ल्यूएचओ)	2020-27	साई, फिलीपींस	जेनेवा
3.	अंतराष्ट्रीय परमाणु उर्जा एजेंसी	2022-27	साई, फिलीपींस	वियाना
4.	अंतराष्ट्रीय श्रम संगठन	2024-28	साई, फिलीपींस	जेनेवा

बाह्य पैनल की भूमिका और जिम्मेदारियाँ:

1. समन्वय और ज्ञान साझा करना:- पैनल विभिन्न संयुक्त राष्ट्र संगठनों के लेखापरीक्षकों के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने, आम चुनौतियों पर चर्चा करने और लेखापरीक्षा पद्धतियों को बढ़ाने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है।
2. ऑडिट प्रथाओं का मानकीकरण:- यह विभिन्न संयुक्त राष्ट्र संस्थाओं में ऑडिट प्रक्रियाओं और रिपोर्टिंग में स्थिरता को बढ़ावा देता है।
3. मार्गदर्शन और सिफारिशें:- पैनल संयुक्त राष्ट्र प्रणाली के भीतर ऑडिट-संबंधी मुद्दों, जोखिम प्रबंधन और वित्तीय प्रशासन पर मार्गदर्शन प्रदान करता है।
4. क्षमता निर्माण:-यह संयुक्त राष्ट्र के कार्यों में लगे लेखापरीक्षकों के लिए प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों की सुविधा प्रदान करता है।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक बाह्य पैनल में एक सक्रिय भागीदार रहा है, जो दुनिया भर में संयुक्त राष्ट्र ऑडिट को बेहतर बनाने के लिए अपनी विशेषज्ञता और अंतर्दृष्टि का योगदान दे रहा है। इस मंच के माध्यम से, भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक अन्य साई के साथ सहयोग करता है, जिससे संयुक्त राष्ट्र संगठनों के लिए उच्च-गुणवत्ता और स्वतंत्र बाहरी ऑडिट सुनिश्चित होता है।

यूएनबीओए और संयुद्र राष्ट्र के बाहरी पैनल के बीच मुख्य अंतर

स्वरूप	यूएनबीओए (संयुक्त राष्ट्र लेखापरीक्षक बोर्ड)	संयुक्त राष्ट्र लेखापरीक्षक का बाहय पैनल
स्थापना	1946 में संयुक्त राष्ट्र महासभा संकल्प 74 (I) द्वारा बनाया गया	संयुक्त राष्ट्र लेखा परीक्षकों का समन्वय संघ
संयोजन	तीन साई को छह साल के कार्यकाल के लिए नियुक्त किया गया	सभी साई संयुक्त राष्ट्र लेखा संस्था का ऑडिट कर रहें हैं
अधिदेश	संयुक्त राष्ट्र प्रणाली की वित्तीय और निष्पादन लेखापरीक्षा आयोजित करता है।	ज्ञान, सर्वोत्तम प्रथाएँ और लेखापरीक्षा पद्धतियाँ साझा करता है।
रिपोर्टीग	सीधे संयुक्त राष्ट्र महासभा को रिपोर्ट करता है।	कोई सीधे रिपोर्टिंग नही बल्कि शिफारिशें प्रदान करता है
कार्य की प्रकृति	औपचारिक लेखापरीक्षा कार्य	

ग्लोबल ऑडिटिंग में भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की भूमिका का महत्व

यूएनबीओए और बाह्य पैनल दोनों के साथ भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की भागीदारी सार्वजनिक क्षेत्र की ऑडिटिंग में इसकी वैश्विक मान्यता और विशेषज्ञता को दर्शाती है। ये भूमिकाएँ अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय और शासन पारिस्थितिकी तंत्र में भारत की प्रतिष्ठा को बढ़ाती हैं। इन विदेशी कार्यो के लाभों में शामिल हैं:

1. वैश्विक जवाबदेही को मजबूत करना:- संयुक्त राष्ट्र संस्थाओं का ऑडिट करके, भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक वैश्विक संस्थानों में वित्तीय पारदर्शिता और दक्षता सुनिश्चित करने में योगदान देता है।

2. भारत में ऑडिट प्रथाओं को बढ़ाना:- अंतरराष्ट्रीय सर्वोत्तम प्रथाओं के संपर्क से भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक को अपनी घरेलू ऑडिट पद्धतियों में सुधार करने में मदद मिलती है।

3. नेटवर्किंग और सहयोग:- इन निकायों में सदस्यता भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक को ज्ञान और विशेषज्ञता का आदान-प्रदान करते हुए अन्य प्रमुख साई के साथ सहयोग करने की अनुमति देती है।

4. क्षमता विकास:- संयुक्त राष्ट्र ऑडिट में भागीदारी से भारतीय ऑडिट पेशेवरों के कौशल में वृद्धि होती है, जिससे उन्हें जटिल अंतरराष्ट्रीय ऑडिट में अनुभव मिलता है।

सारांश में, संयुक्त राष्ट्र लेखापरीक्षक बोर्ड

यूएनबीओए और संयुक्त राष्ट्र के लेखापरीक्षकों के बाह्य पैनल का अक्सर साई भारत के विदेशी कार्यों के संदर्भ में एक साथ उल्लेख किया जाता है, वे अलग-अलग उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। यूएनबीओए संयुक्त राष्ट्र प्रणाली के ऑडिट के लिए विशिष्ट जिम्मेदारियों वाला एक औपचारिक ऑडिट निकाय है। जबकि बाहरी पैनल विभिन्न संयुक्त राष्ट्र ऑडिटरों के बीच समन्वय और ज्ञान-साझाकरण मंच के रूप में कार्य करता है। इन दोनों संस्थाओं में भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की भागीदारी सार्वजनिक क्षेत्र की ऑडिटिंग में इसके बढ़ते वैश्विक प्रभाव और विश्व मंच पर वित्तीय जवाबदेही के प्रति इसकी प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

जैसे-जैसे भारत अंतरराष्ट्रीय प्रशासन और वित्तीय निरीक्षण में अपने पदचिह्न का विस्तार करना जारी रखता है, इन वैश्विक लेखापरीक्षा कार्यों में भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाएगी। इन अंतरों को समझने से संयुक्त राष्ट्र ऑडिट परिदृश्य में भारत के योगदान के प्रभाव और महत्व की सराहना करने में मदद मिलती है।

राजभाषा हिन्दी: चुनौतियाँ और संभावनाएँ

संजीव कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत विविध भाषाओं और संस्कृतियों का देश है। जहाँ 22 अनुसूचित भाषाएँ और सैकड़ों बोलियाँ बोली जाती हैं। ऐसे बहुभाषी परिदृश्य में हिन्दी को 14 सितंबर 1949 को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। यह न सिर्फ संचार का माध्यम है बल्कि राष्ट्रीय एकता का प्रतीक भी है। हालाँकि, हिन्दी के समक्ष अनेक चुनौतियाँ हैं, लेकिन इसकी संभावनाएँ भी उतनी ही व्यापक हैं।

हिन्दी की प्रमुख चुनौतियाँ

1. भाषाई विविधता और क्षेत्रीय भाषाओं का प्रभाव: –
भारत में विभिन्न राज्यों की अपनी भाषाएँ और लिपियाँ हैं, जिनमें तमिल, तेलुगु, बंगाली, मराठी, कन्नड़, पंजाबी आदि प्रमुख हैं। कई राज्यों में हिन्दी को बाहरी भाषा की तरह देखा जाता है, जिससे इसके प्रसार में बाधा आती है।

2.अंग्रेजी का बढ़ता वर्चस्व: – वैश्वीकरण और तकनीकी विकास के कारण अंग्रेजी का प्रभाव बढ़ा है। सरकारी व निजी संस्थानों, उच्च शिक्षा और व्यापार में अंग्रेजी का व्यापक प्रयोग हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए चुनौती बन गया है।

3.तकनीकी क्षेत्र में हिन्दी की सीमाएँ: –
हालाँकि डिजिटल युग में हिन्दी का उपयोग बढ़ा है, फिर भी विज्ञान, तकनीक और उच्च शिक्षा के कई क्षेत्रें में हिन्दी में उपयुक्त शब्दावली और संसाधनों की कमी महसूस की जाती है।

4.सरकारी संस्थानों में हिन्दी का सीमित उपयोग: –
संविधान में राजभाषा के रूप में हिन्दी को स्थान देने के बावजूद, सरकारी कार्यालयों और न्यायालयों में अंग्रेजी का अधिक प्रयोग होता है। कई बार सरकारी दस्तावेजों, न्यायिक आदेशों और प्रशासनिक कार्यो मे हिन्दी का उपयोग न्यूनतम रहता है।

5.युवा पीढ़ी में हिन्दी के प्रति रुचि की कमी: –
आज की युवा पीढ़ी अंग्रेजी को प्रगति और आधुनिकता की भाषा मानती है, जिससे हिन्दी में लेखन, पढ़ाई और संवाद का स्तर प्रभावित हो रहा है। हिन्दी साहित्य, कविता और लेखन की लोकप्रियता भी डिजिटल युग में चुनौतीपूर्ण स्थिति में है।

हिन्दी की संभावनाएँ और समाधान: –

हिन्दी की जड़ें भारतीय इतिहास में गहराई से जुड़ी हुई हैं। यह भाषा संतों, कवियों और लेखकों की अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम रही है। तुलसीदास, सूरदास, कबीर और प्रेमचंद जैसे महान साहित्यकारों ने हिन्दी में अपने विचार व्यक्त करके समाज को दिशा दी है। हिन्दी न केवल भारत के साहित्यिक आंदोलन का हिस्सा रही है, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भी यह जनमानस को एकजुट करने का सशक्त माध्यम बनी।

हिन्दी भाषा का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि यह भारतीय संस्कृति, परंपराओं और मूल्यों को संजोए रखने का कार्य करती है। यह उन लोक कथाओं, गीतों और नृत्यों की भाषा है, जिनके माध्यम से पीढ़ियों से हमारी धरोहर का संरक्षण होता आया है।

आज डिजिटल मीडिया, सोशल मीडिया और इंटरनेट पर हिन्दी का व्यापक उपयोग हो रहा है। गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, अमेजन और फेसबुक जैसी कंपनियाँ हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए विशेष प्रयास कर रही हैं। हिन्दी ब्लॉगिंग, यूटयूब, और सोशल मीडिया पर हिन्दी कंटेंट की लोकप्रियता इसकी संभावनाओं को उजागर करती है।

हिन्दी को प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा में अधिक प्रभावी बनाने के लिए पाठयक्रमों को समृद्ध करना आवश्यक है। विज्ञान, गणित, प्रौद्योगिकी और शोध में हिन्दी भाषा में सामग्री विकसित कर इसे और मजबूत बनाया जा सकता है।

यदि हिन्दी को व्यापार और प्रशासन में प्रमुख स्थान दिया जाए, तो यह अधिक प्रभावी होगी। कई कंपनियाँ अपने विज्ञापन और उत्पाद विवरण हिन्दी में दे रही हैं, जिससे उपभोक्ताओं से जुड़ने में मदद

मिल रही है। हिन्दी साहित्य, सिनेमा और संगीत हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बॉलीवुड ने हिन्दी को वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय बनाया है। इसके अलावा, वेब सीरीज, ओटीटी प्लेटफार्म और टीवी शोज भी हिन्दी को व्यापक दर्शक के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बॉलीवुड ने हिन्दी को वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय बनाया है। इसके अलावा, वेब सीरीज, ओटीटी प्लेटफार्म और टीवी शोज भी हिन्दी को व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँचा रहे हैं।

हिन्दी को अन्य भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करके आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। यदि सभी भारतीय भाषाएँ एक-दूसरे की पूरक बनकर कार्य करें, तो भाषाई एकता को बल मिलेगा। निष्कर्ष: राजभाषा हिन्दी के समक्ष कुछ चुनौतियाँ अवश्य हैं, लेकिन इसकी संभावनाएँ कहीं अधिक व्यापक हैं। तकनीक, शिक्षा, व्यापार और साहित्य के माध्यम से हिन्दी को सशक्त बनाया जा सकता है। अंग्रेजी या अन्य भाषाओं से प्रतिस्पर्धा करने के बजाय, हिन्दी को इनके साथ समन्वय स्थापित करके आगे बढ़ाना होगा। यदि हम सभी हिन्दी के प्रति सम्मान और गर्व की भावना रखें और इसके विकास के लिए योगदान दें, तो हिन्दी न केवल भारत में बल्कि वैश्विक स्तर पर भी अपनी पहचान को और मजबूत कर सकेगी।

"हिन्दी केवल भाषा नहीं, यह हमारी संस्कृति और पहचान है। इसे अपनाइए, और आगे बढ़ाइए!"

प्रेम, सौंदर्य, उल्लास और वीरता का आगमन वसंत

मनोज कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

हवा में आम मंजरियों की मादक सुगंध मन-प्राण को मोहने लगी है, और कोयल की मधुर कूक हृदय में प्रेम की धीमी अग्नि जलाने लगी है। हेमंत की ठिठुरन और शीत की निस्तब्धता को पीछे छोड़कर अब प्रकृति प्रेम के रंग में रंगने लगी है।वसंत का आगमन हो चुका है। एक ऐसा ऋतु, जो केवल प्रकृति को ही नहीं, मनुष्य के अंत:करण को भी उल्लास से भर देती है।

केदारनाथ अग्रवाल "वसंती हवा हूँ कविता में लिखते है:-

हँसी सब दिशाएँ,
हँसे लहलहाते
हरे खेत सारे,
हँसी चमचमाती
भरी धूप प्यारी
बसंती हवा में
हँसी सृष्टि सारी!
हवा हूँ, हवा मैं
बसंती हवा हूँ!

वसंत आते ही प्रकृति अपने नये श्रृंगार में सजीव हो उठती है। वृक्षों की टहनियाँ, जो अभी तक ठूँठ-सी लग रही थीं, अब नवपल्लवों से लदकर हरीतिमा का आभास देने लगी हैं। सरसों के पीले फूलों से लहलहाते खेत, मानो पीले आँचल में सजी किसी नवयौवना की तरह इठला रही हों। वनों में कदंब, अशोक और टेसू के फूल खिल उठते हैं, और दूर तक फैले पलाश के लाल-लाल पुष्प मानो धरा पर प्रेम का सिंदूर बिखेर रहे हों।

वसंत का यह सौंदर्य केवल आँखों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह हृदय की गहराइयों में उतरकर प्रेम के मधुर भावों को भी जाग्रत कर देता है।श्रृंगार रस की कोमलता से परिपूर्ण इस ऋतु में प्रेमी-प्रेमिका के मन भी अनायास ही पुलकित हो उठते हैं। पुरवा के मंद झोंके जब अलकों को छूते हैं, तो मन मचल उठता है। बागों में खिली हुई कचनार और गुलाब की कलियाँ मानो नवयौवनाओं की अधखिली मुस्कान की भाँति चंचल हो उठती हैं।

कोयल की कूक, पपीहे की पुकार, और भँवरों का गुंजन वातावरण को संगीतमय बना देता है। यह वह ऋृतु है, जब मनुष्य अपने भीतर दबी प्रेम की कोमल भावनाओं को मुक्त कर देता है। नदियों का प्रवाह भी तेज हो जाता है, लहरें मचलने लगती हैं, जैसे कोई प्रियतमा अपने प्रियतम के आगमन से पुलकित हो उठी हो।

वसंत ऋृतु में वसंत पंचमी, शिवरात्रि तथा होली जैसे पर्व मनाए जाते हैं। भारतीय संगीत, साहित्य और कला में भी इसका महत्वपूर्ण स्थान है। संगीत में एक विशेष राग वसंत के नाम पर बनाया गया है जिसे राग वसंत कहते हैं।

'पौराणिक कथाओं के अनुसार वसंत को कामदेव का पुत्र कहा गया है। देव कवि ने वसंत ऋृतु का वर्णन करते हुए कहा है कि रूप व सौंदर्य के देवता कामदेव के घर पुत्रोत्पत्ति का समाचार पाते ही प्रकृति झूम उठती है। पेड़ें उसके लिए नव पल्लव का पालना डालते है, फूल वस्त्र पहनाते हैं पवन झुलाती है और कोयल उसे गीत सुनाकर बहलाती है।

भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है ऋृतुओं में मैं वसंत हूँ। वे सारे देवताओं और परम शक्तियों में सबसे ऊपर हैं। वैसे ही वसंत श्रृतु भी सभी ऋृतुओं में श्रेष्ठ है।कवि और साहित्यकारों के लिए भी वसंत सृजन का काल है। कालिदास के 'ऋृतुसंहार' में वसंत का मादक वर्णन है, तो जयदेव की गीत गोविंद में कृष्ण-राधा के प्रेम की मधुर झंकार वसंत के सौंदर्य में सराबोर मिलती है। बिहारी, सूर, और विद्यापति की कविताओं में भी वसंत का अनुपम श्रृंगार झलकता है।

निराला की कविता कहती है:-

सखि वसन्त आया ।
भरा हर्ष वन के मन,
नवोत्कर्ष छाया ।

दिनकर लिखते हैं:-

प्रात जगाता शिशु वसंत को नव गुलाब दे-दे
ताली
तितली बनी देव की कविता वन वन
उड़ती मतवाली।
सुंदरता को जगी देखकर जी करता मैं भी कुछ
गाऊँ :
मैं भी आज प्रकृति-पूजन में निज कविता के
दीप जलाऊँ।

वसंत के संदर्भ में यदि सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता का उल्लेख न हो तो वसंत ऋतु अधूरी होगी । सारी भूमि जब प्रेम, उल्लास और सौंदर्य से सराबोर हो तब देश की सीमा पर तैनात हमारे सैनिक का वसंत कैसा होगा ?

वीरों का कैसा हो वसंत?
आ रही हिमाचल से पुकार,
है उदधि गरजता बार-बार,
प्राची, पश्चिम, भू, नभ अपार,
सब पूछ रहे हैं दिग-दिगंत,
वीरों का कैसा हो वसंत?

एक कवि लिखते हैं:-

वीरों का होता अंत नहीं है
वीरों का होता वसंत वहीं है

वसंत केवल ऋतु नहीं, यह प्रेम, सौंदर्य और नवजीवन का संदेश है। यह वह समय है जब जीवन में पुन: रंग भर जाते हैं, मन की नीरवता प्रेम के स्वर में गूँज उठती है, और तन-मन मधुर भावनाओं से झंकृत हो उठता है।

वसंत का यह अद्भुत आगमन केवल प्रकृति को नहीं, बल्कि मनुष्य के हृदय को भी श्रृंगार से भर देता है। यह जीवन की नीरसता को हर कर उसमें नवीन उमंगों का संचार करता है। तो आओ, प्रकृति के इस मधुर आमंत्रण को स्वीकारें और ऋतुराज वसंत के रंग में रंग जाएँ!

जनकवि नागार्जुन की कविता:-

रंग-बिरंगी खिली-अधखिली
किसिम-किसिम की गंधों-स्वादों वाली ये
मंजरियां
तरुण आम की डाल-डाल टहनी-टहनी पर
झूम रही हैं...
चूम रही हैं--
कुसुमाकर को! ऋतुओं के राजाधिराज को !!

स्वस्थ तन में ही रह सकता हैं स्वस्थ मन

शिव शंकर राय
पर्यवेक्षक

एक प्रसिद्ध उक्ति है कि "स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का वास होता है।" जो इस तथ्य को स्पष्ट करती है कि शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य का आपस में गहरा संबंध है। यदि शरीर स्वस्थ होगा, तो मन भी प्रसन्न और ऊर्जावान रहेगा, जिससे जीवन में सफलता और संतोष प्राप्त करना आसान हो जाता है। विश्व में कई शोधों से पता चला है कि करोना महामारी के बाद विश्व भर में लोगों के मानसिक स्वास्थ्य की गुणवत्ता में कमी हुई है। लोगों के अकेलेपन ने उनके मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित किया।

शारीरिक स्वास्थ्य का महत्व:-स्वस्थ शरीर के बिना कोई भी व्यक्ति अपने कार्यों को पूरी ऊर्जा और उत्साह के साथ नहीं कर सकता। एक बीमार या कमजोर शरीर न केवल दैनिक गतिविधियों को प्रभावित करता है, बल्कि मानसिक तनाव, चिंता और अवसाद का कारण भी बनता है। नियमित व्यायाम, संतुलित आहार और उचित दिनचर्या अपनाने से शरीर को स्वस्थ रखा जा सकता है, जिससे मानसिक शांति और आत्मविश्वास बना रहता है।

मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव:-अगर मन शांत और संतुलित रहेगा, तो व्यक्ति जीवन की कठिनाइयों का सामना करने में सक्षम होगा। एक स्वस्थ मन अच्छे विचारों को जन्म देता है और सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है। वहीं, मानसिक तनाव, चिंता और नकारात्मकता से शारीरिक स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है, जिससे हृदय रोग, मधुमेह और उच्च रक्तचाप जैसी बीमारियाँ हो सकती हैं।

स्वस्थ जीवन के लिए संतुलन:- आवश्यक स्वस्थ तन और मन के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए योग, ध्यान, खेलकूद और सही जीवनशैली को अपनाना आवश्यक है। व्यक्ति को न केवल अपने शरीर की देखभाल करनी चाहिए, बल्कि सकारात्मक सोच और मानसिक शांति के लिए भी प्रयास करने चाहिए।

स्वस्थ दिनचर्या- देर रात तक जागना मानसिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है । जल्दी सोना और प्रातः जागना अच्छा है।

इसलिए, यदि हम अपने शरीर को स्वस्थ रखेंगे, तो हमारा मन भी प्रसन्न और सशक्त रहेगा। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का सामंजस्य ही सच्चे सुख और सफलता की कुंजी है।

अपना बिहार

कुमार शैलेंद्र चन्द
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

करतें हैं हम नमन उसका
जिस धरती का नाम बिहार है।
ये आर्यभट्ट की भूमि
गुरु गोविंद इसके संतान हैं।

पूरब में बंगाल की खाड़ी
पश्चिम में बाबा विश्वनाथ
उत्तर में गिरिराज हिमालय
दक्षिण में छोटनागपुर पठार
करतें हैं हम नमन उसका
जिस धरती का नाम बिहार है।

है यह पावन ज्ञान की धरती
नालंदा, विक्रम, उदन्तपुरी स्थान
बुद्ध, महावीर जैसे ज्ञानी
इस धरती पर लिए अवतार
करते हैं हम नमन उसका
जिस धरती का नाम बिहार है।

बहती है यहाँ निर्मल धारा
गंगा गंडक का संगम स्थान
बाबा हरिहर नाम है इसका
जहाँ लिए विष्णु, शिव अवतार
करते हैं हम नमन उसका
जिस धरती का नाम बिहार है।

सुनो! है ये बिहार की धरती
जहाँ जन्म लिए कई वीर महान
कितना सुनाऊँ इस धरती की गाथा
आकर देखो खुद अपना बिहार।

मान लो तू 'शैलेंद्र' का कहना
आओ देखो खुद अपना बिहार।
करते हैं हम नमन उसका
जिस धरती का नाम बिहार है।

जुड़ते पैसे, बिखरते रिश्ते

रूपेश कुमार सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय पर अपने विचार लेकर प्रस्तुत हूँ आपके समक्ष। ऐसा नहीं की आप या अन्य व्यक्ति इस विषय से अनजान हैं या उन्होंने इस विषय पर कभी विचार न किया हो परन्तु मानव जीवन को गहराई से प्रभावित करते हुए भी यह विषय उदासीनता का शिकार है। जी हाँ! आज का युग भौतिकतावादी है। सफलता का पैमाना बैंक बैलेंस, गाड़ियाँ, और बंगले बन चुके हैं। परन्तु इस "सफलता" की कीमत क्या है? कहीं यह कीमत हमारे रिश्तों के टूटने के रूप में तो नहीं चुकाई जा रही? "जुड़ते पैसे, बिखरते रिश्ते" का यह द्वंद्व सिर्फ मेरे-आपके मन की भावनात्मक उथल-पुथल भर नहीं, बल्कि समाज में गहराता एक सच है। जब व्यक्ति धन कमाने की अंधी दौड़ में शामिल होता है, तो वह अक्सर अपनों को पीछे छोड़ देता है या यूँ कहें की अपनों से कट जाता है। आइये अपनी तथाकथित अति-व्यस्त दिनचर्या से चंद पल दूसरों के लिए न सही, अपने लिए ही चुरा कर थोड़ा विचार करते हैं!

मेरे साथ वे सभी पाठक जो लगभग 40 वर्ष की आयु से गुजर रहे हैं, उन्होंने कम उम्र में परिवर्तनों का एक लम्बा दौर देखा है। जब गाँव में कच्चे घर हुआ करते थे, फर्श संगमरमर की नहीं, मिट्टी की होती थी, त्योहारों के अवसर पर गाय के गोबर से लीपा हुआ घर हमें स्वर्ग जैसा लगता था। बारिश में खपरैल छत से टपकते पानी के नीचे बाल्टी लगाने में भी हमें मेहमानों के आगे भी बेइज्जती महसूस नहीं होती थी, सूजी का हलवा छप्पन भोग जैसा लगता था, बिना फेसियल और आई ब्रो बनाये हुए भी बहु, बेटियों की सुन्दरता पुरे गाँव में प्रतिष्ठित हो जाती थी, गाँव की चौपाल पर शाम की बैठक वर्ल्ड टूर की तरह सुखदायी होती थी और सबसे बड़ी बात मित्रें जब पूरा परिवार साथ हँसता था, साथ रोता था। परिवार के होते हुए बच्चे अनाथों की तरह न पला करते थे। यह वह समय था जब खुशी सिर्फ खुशी होती थी, दु:ख सिर्फ दु:ख होता था, दोनों ही वास्तविक होते थे, दोनों भीतर से महसूस होते थे, व्हाट्सएप्प और फेसबुक पर बिखरी खुशियों और दु:खों की तरह नकली न होते थे वे फिर हमारे जीवन में प्रवेश हुआ असंतोष रूपी क्रूर भस्मासुर का जिसे जन्म दिया था शहरों की दौलत की चकाचौंध ने। यह भस्मासुर अन्य असुरों से अलग है। इसके शिकार का तरीका अलग है, यह हमारे शरीर से प्रत्यक्ष रक्तपान नहीं करता बल्कि असंतोष की नलिका के जरिये बड़े आराम से धीरे-धीरे हमारा रक्तपान करता है। इस असुर के प्रभाव में आप करोड़पति होकर भी विश्व के सबसे धनी व्यक्ति से अपनी तुलना कर बहुत आसानी से दुखी हो जा सकते हैं। फिर इस दु:ख को दूर करने के लिए आप स्वयं को दौलत कमाने की मशीन बना डालते हैं और मशीन का कोई अपना नहीं होता। आप अपनों से बिछड़कर जीना भूल जाते हैं। बीमारियों को अपने शरीर का जयचंद बनकर तनाव के चोर रास्ते से आमंत्रित करते हैं। समय से पहले बूढ़े होते हैं और असमय ही काल-कवलित हो जाते हैं। इस प्रकार असंतोष का यह राक्षस बड़े आराम से बिना किसी विशेष प्रयास के आपकी प्राण उर्जा चूसता है, चटखारे लेता है और फिर धीरे धीरे आपको पूरा निगल जाता है। आइये आज खुद के समालोचक बनते हैं और विवेचना करते हैं कि पैसे जोड़ने की अंधी वासना में हमने अपनी जिदगी के श्रोत अपने रिश्तों को कितनी क्रूरता से रौंदा है।

पारिवारिक जीवन पर धन की मार:-

1. वैवाहिक संबंधों में दरारें एवं विवाहेत्तर संबंध-

आजकल जीवन में भोग-विलास की अधिकाधिक

चाह में नौकरी पेशा पति-पत्नी का चलन तेजी से बढ़ रहा है। अक्सर दोनों की नौकरी अलग-अलग स्थानों पर होती है। मोबाईल, ऑडियो-वीडियो कॉलिंग के जरिये इस दूरी को पाटने का भरसक प्रयास करता है, परन्तु एक यंत्र भला हमसफर की कमी क्या पूरी कर पायेगा। घर की चकाचौंध के बीच अकेलापन और पति-पत्नी के भावनात्मक संघर्ष बढ़ रहे हैं। नित्य की भागदौड़ और तनाव में थका तन-मन साथी के जरिये इस दूरी को पाटने का भरसक प्रयास करता है। परन्तु एक यंत्र भला हमसफर की कमी क्या पूरी कर पायेगा। घर की चकाचौंध के बीच अकेलापन और पति-पत्नी के भावनात्मक संघर्ष बढ़ रहे हैं। नित्य की भागदौड़ और तनाव में थका तन-मन साथी के स्नेह और मीठे शब्दों की आस करता है, पर उसे सिर्फ आलिशान फ्लैट की चमकती दीवारें और अकेलापन मिलता है। साथ ही, कुछ पत्नियाँ पति के सामीप्य और प्रेम से अधिक उनकी आर्थिक सफलता को महत्व देती हैं, जिससे पति को निरंतर आय बढ़ाने का दबाव महसूस होता है। वे अपनी आय बढ़ाने के लिए असंवैधानिक तरीकों का इस्तेमाल कर बैठते हैं यह भूलते हुए कि जिस परिवार के लिए वह गलत राह चुन रहे, उसपर अगर वह फंसते हैं तो संभव है दुनिया के साथ वह परिवार भी उन्हें गलत ही कहेगा।

गृहस्थी की ट्रेन को 'वन्दे भारत' की गति देने के लालच में युवक नौकरीपेशा लड़कियों से विवाह कर तो रहे हैं परन्तु या तो पत्नी से आर्थिक सहायता लेने में उन्हें उनका मर्दाना अहं रोक रहा है या उनकी पत्नियाँ अपनी आय की तरफ पति की नजर उठते ही दुर्गा-काली का रूप धारण कर ले रही हैं । नतीजा यह की रेलगाड़ी में डबल इंजन जोड़ने के स्वार्थ में रेलगाड़ी पटरी से ही उतर जा रही है, उतरे भी क्यों न, जिस संबंध की बुनियाद ही स्वार्थ पर आधारित हो वह कब तक टिक पायेगा!

पाठकों, पति-पत्नी के बीच उभर रही उपर्युक्त समस्याएँ दोनों के बीच दूरियाँ बढा रही हैं। वे पैसे तो जोड़ ले रहे, परन्तु अपने संबंध को बिखरने से नहीं रोक पा रहे । ऐसे में परस्त्री/परपुरुष के दो मीठे बोल सहज ही उनको विवाहेत्तर संबंधों की ओर धकेल रहे हैं। नतीजा तलाक, कुंठा और कभी कभी तो हत्या-आत्महत्या तक भी पहुँच रहा है ।

2. माता-पिता और बच्चों के बीच दूरियाँ

आज के अभिभावक अपने बच्चों को अच्छा इंसान बनाने का नहीं सोचते, उन्हें फिक्र इस बात की होती है कि वो भविष्य में पैसा छापने वाली मशीन बन पाएंगे या नहीं । मँहगे स्कूल अभिभावकों के स्टेट्स का पर्याय बन चुके हैं । परन्तु इसके चक्कर में अभिभावक अपने बच्चे के सुख-दु:ख उनकी भावनाओं से कोसों दूर हो जाता है । पति-पत्नी दिन भर पैसे जोड़ रहे होते हैं और उनके मासूम का बचपन किसी क्रेच में या घर में बेबी सीटर के अजनबी साये में दम तोड़ रहा होता है । हाल में किये गए सर्वेक्षणों में 60%-70% युवाओं ने माना कि उनके माता-पिता उनकी भावनाओं को समझने के बजाय उनकी पढ़ाई या कैरियर पर ही ध्यान देते हैं। नतीजा? बच्चों का अकेलापन और मानसिक तनाव और उनकी की दुनिया में महत्वहीन होता जाता है शब्द- "माँ-बाप"।

3. संयुक्त परिवार का विघटन

पहले भारत में संयुक्त परिवार की अवधारणा थी, जहाँ रिश्ते धन से ऊपर थे। आज नौकरियों के लिए शहरों में पलायन और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं ने इन परंपराओं को तोड़ दिया है। वर्तमान में शादी से पूर्व तो लड़के के माँ-बाप को संबंध तय करने के लिए आवश्यक समझा जाता है परन्तु शादी के

तुरंत बाद ही लड़के को उसके माँ-बाप, बहन-भाई और सभी संबंधों से दूर कर अनाथ बनाने में पूरा वधू पक्ष जी-जान से जुट जाता है ताकि उनके दामाद की सारी आय सिर्फ उनकी बेटी पर खर्च हो। एक करोड़ से ऊपर का फ्लैट कोई सीमित आय वाला व्यक्ति 50-55 हजार की मासिक इन्स्टालमेन्ट में ले ले तो उसे कहीं न कहीं तो अपनी जिम्मेवारियों से भागना होगा, असामाजिक होना होगा, अपने रिश्तों को भूलना होगा और इस कड़ी में वर्तमान पीढ़ी को जो सबसे व्यर्थ, अनुपयोगी और बोझ संबंध महसूस होता है, वो हैं माँ-बाप और फिर बारी होती है अन्य संबंधों की । बुजुर्ग अब वृद्धाश्रमों में रहने को मजबूर हैं और भाई-बहनों के बीच संपत्ति के झगड़े आम हैं।

सोशल मीडिया और भौतिकवाद का प्रभाव

सोशल मीडिया ने आज "परफेक्ट लाइफ" का एक भ्रम पैदा कर दिया है, जहाँ इंस्टाग्राम, फेसबुक और व्हाट्सएप्प पर महंगे गिफ्ट्स, विदेशी छुट्टियाँ और लग्जरी आइटम्स के जरिए सफलता का ढिंढोरा पीटा जाता है। इस दिखावे की संस्कृति में वास्तविक भाव छिप जाते हैं और रिश्तों की गहराई खोने लगती है। युवा वर्ग अब दोस्तों और पड़ोसियों की उपलब्धियों से तुलना कर हीन भावना में डूब जाता है। जिससे परिवार और सामाजिक संबंध प्रभावित होते हैं। साथ ही, ब्रांड्स लगातार यह संदेश देते हैं कि प्रेम और सम्मान महंगे उपहारों से मापा जाता है, जिससे उपभोक्तावाद का जाल रिश्तों की सरलता और स्वाभाविकता को समाप्त कर रहा है।

पीढ़ीगत अंतर और मूल्यों का संघर्ष

पुरानी पीढ़ी के लिए "रिश्ते ही धन है" जैसी कहावतें जीवन का आधार थीं। आज के युवा करियर और स्वतंत्रता को प्राथमिकता देते हैं। आज "मैच" करने वाले जीवनसाथी की जगह "हाई-प्रोफाइल" जॉब और बैंक बैलेंस ने ले ली है। इससे प्रेम विवाहों में भी तनाव बढ़ा है।

4. **महिलाओं की भूमिका और आर्थिक स्वतंत्रता** - महिलाओं के कामकाजी होने से परिवारों की आय में सुधार हुआ है, पर भारतीय परंपराओं के अनुसार घरेलू जिम्मेदारियों का बोझ आज भी पत्नी पर ही रहता है। भले ही पति-पत्नी एक साथ ऑफिस लौटें, शाम की चाय, भोजन, बच्चों की देखभाल और वृद्धों की सेवा जैसी जिम्मेदारियाँ हमेशा महिला पर होती है। ऐसी स्थिति में शिक्षित, आत्मनिर्भर महिलाएं विद्रोह की ओर प्रवृत्त हो जाती है। पुरुष जब घरेलू काम बाँटने का प्रयास करते हैं, तो उनके मर्दाना अहंकार को ठेस लगती है, जिससे उनमें अंदर ही अंदर घुटन और असंतोष उत्पन्न हो जाता है। नतीजतन शादीशुदा जीवन एक व्यापारिक साझेदारी में बदल जाता है और उपेक्षित प्रेम घर के कोने में सिसकियाँ लेने को मजबूर है।

मनोवैज्ञानिक प्रभाव और अकेलापन

1. तनाव और अवसाद - लगातार धन कमाने की होड़ ने लोगों को भावनात्मक रूप से खोखला कर दिया है। WHO के अनुसार, भारत में 20%-30% युवा डिप्रेशन के शिकार हैं, जिनमें से अधिकांश का कारण काम का दबाव या रिश्तों की उपेक्षा है।
2. मास्लो का सिद्धांत और अधूरापन - मास्लो की जरूरतों के सोपान के अनुसार, धन "सुरक्षा" के बाद प्यार और सम्मान की आवश्यकता आती है। पर आज लोग पहले चरण में ही अटक गए हैं। नतीजतन, उन्हें सफलता में भी खुशी नहीं मिलती।
3. व्यस्तता का भ्रम - "टाइम है ही नहीं" एक झूठा बहाना बन गया है। सच यह है कि हम अपनी प्राथमिकताएँ गलत तरीके से तय करते हैं। फोन पर ईमेल चेक करते हुए बच्चे का

होमवर्क न कर पाना इसका उदाहरण है।

संतुलन की राह: समाधान के उपाय:

मित्रों आज का युग परिवर्तन का युग है, मानव सभ्यता के उद्भव के समय ही हम परिवर्तन की लम्बी श्रृंखला के साक्षी रहे हैं, परन्तु इन परिवर्तनों ने कभी हमारे अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न नहीं लगाया परिवर्तन की आँधी से उत्पन्न विलासिता का यह बवंडर उन सभी परिवर्तनों से खतरनाक है जो हमारे घर की मजबूत छत, हमारे रिश्तों को अपने साथ उड़ा कर घर को ध्वस्त करने पर आमादा है। आइये हम मिलकर प्रयास करें और अपने रिश्तों की रक्षा करें। इस दिशा में निम्नलिखित प्रयास सार्थक हो सकते हैं: -

1. सुख की परिभाषा समझें - मित्रों यह सबसे आवश्यक कदम है क्योंकि अन्य सभी समस्याओं का मूल यही है । सुख वह है जो हमें आन्तरिक खुशी देता है, यहाँ तनाव का दूर-दूर तक कोई स्थान नहीं है। अगर आपको तनाव होता है तो आप खुशी नहीं ढूंढ रहे बस दौड़ती, भागती भीड़ का हिस्सा बन रहे हैं।

2. अपनी वास्तविक आवश्यकताओं को पहचानें - मेरे साथियों, वर्तमान समय में हम मानवों के दु:ख का सबसे बड़ा कारण है अपने पड़ोसी, अपने सहकर्मी, अपने संबंधियों से तुलना। हो सके तो सोशल मीडिया द्वारा तेजी से फैलाये जा रहे स्टेट्स के जहर से स्वयं और अपने परिवार को बचायें। आप संपन्न लोगों का सिर्फ बाहरी रूप देखते हैं, उनके विलासिता के साधानों को देखते हैं और उनसे अपनी तुलना कर दु:ख बटोरते हैं, कभी उनके जीवन में झांकेंगे तो पता चलेगा कि उनका जीवन कितना खोखला है, उन्हें नींद के लिए भी दवाइयां लेनी पड़ती हैं, परिवार के साथ बिताने के लिए उनके पास समय नहीं है । आपको जो दिखता है, वह उनका मेकअप होता है -उसके भीतर की सिकन नहीं दिखती है आपको । उनका खोखलापन, दिखावा नहीं दिखता आपको । रोटी, कपड़ा और मकान के अलावा अन्य कोई भी सुख तभी सुख है जब वह आपको दुखी न कर रहा हो, आपको अपनों से दूर न कर रहा हो, आपका चैन न लूट रहा हो । अपनी आवश्यकताओं को अपने माता-पिता, अपनी पत्नी-बच्चों के होठों की असली मुस्कान के पैमाने से माप कर तय करें ।

3. व्यस्तता के भ्रम को दूर करें - सप्ताह में एक दिन "डिजिटल डिटॉक्स" रखें। परिवार के साथ बिताए गए छोटे-छोटे पल (जैसे साथ खाना बनाना) रिश्तों को मजबूत करते हैं।

4. वित्तीय योजना में संबंधों को शामिल करें - परिवार का बजट बनाते समय छुटिट्यों या परिवारिक गतिविधियों के लिए फंड आवंटित करें। "पैसा बचाना" जरूरी है, लेकिन "यादें बनाना" उससे भी अधिक।

5. संयुक्त परिवार की ओर लौटें - यह सच है कि अपनी उच्च शिक्षा की परिणति युवाओं को नौकरी ही जंचती है, मंहगाई के अनुरूप पति-पत्नी दोनों का रोजगार में होना कई बार न्यायोचित भी जान पड़ता है । इस स्थिति में परिवार न बिखरे इसलिए अपने माता-पिता को फिर से अपने परिवार की परिभाषा में शामिल करें । उन्हें साथ रखें । वे आपके बच्चों को अनाथ न महसूस होने देंगे । उन्हें आपकी व्यस्तता का उद्देश्य समझायेंगे । आप पति-पत्नी के थके हुए वजूद को संभालेंगे, नीतिगत सलाह देंगे ।

6. होम मेकर के महत्व को समझें-पति अगर पैसे कमाता है तो एक हाउसवाइफ उसके घर को घर बनाती है। पति का यह कर्तव्य है की पत्नी की भूमिका के महत्व को समझे, उसके योगदान को समानता का दर्जा दे । गृहणियों को भी समझना होगा कि वह हाउसवाइफ नहीं होम मेकर हैं, उसमें उन्हें गर्व का अनुभव होना चाहिए, लज्जा या हीनभावना का नहीं । होम मेकर बनने का यह अर्थ नहीं

कि उनकी पढाई, उनका ज्ञान बेकार हो गया, बल्कि उस ज्ञान से वह एक सुन्दर परिवार की सुदृढ़ नींव रख सकती है । अन्य नारियों के लिए एक मिसाल बन सकती हैं ।

7. सामाजिक बदलाव की पहल - कंपनियों को वर्क-लाइफ बैलेंस को बढ़ावा देना चाहिए। "फ्लेक्सी-आवर्स, वर्क फॉर्म होम, और पेरेंटल लीव जैसी नीतियाँ मददगार हो सकती हैं।

8. शिक्षा और जागरूकता - स्कूलों में इमोशनल इंटेलिजेंस और रिलेशनशिप मैनेजमेंट जैसे विषय पढ़ाए जाने चाहिए। युवाओं को समझाना होगा कि "सक्सेस" का मतलब सिर्फ पैसा नहीं है।

मित्रों उपर्युक्त उपायों के अलावा आप अपनी परिस्थितियों और प्राथमिकताओं के आधार पर अन्य उपाय स्वयं ढूंढ सकते हैं, बस मेरी यह सलाह घ्यान में रखें कि धन जीवन का साधन है, साघ्य नहीं। जब हम अपने रिश्तों को निवेश की तरह संभालेंगे-समय, विश्वास, और संवाद का "लाभ" देकर तभी सच्ची समृद्धि मिलेगी। याद रखें पैसा कमाने के चक्कर में वो पल न खोएँ, जो फिर लौटकर नहीं आते।

सेवानिवृत्ति

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार परिवार के निम्नलिखित कार्मिक अपने कार्यालयीन दायित्व का निष्ठापूर्वक निर्वहन करने के बाद सेवानिवृत हुए है। 'प्रहरी परिवार' उनके स्वस्थ एवं आनंदमयी जीवन की कामना करता है।

क्र.सं.	नाम	पदनाम	सेवानिवृति की तिथि
1.	पंकज कुमार सिंह नं-1	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	31/10/2024
2.	उमा शंकर तिवारी	सहायक पर्यवेक्षक	31/12/2024
3.	संगीता वर्मा	लेखापरीक्षक	31/12/2024
4.	अजय कुमार सिन्हा	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	31/12/2024
5.	आर्येन्द्र प्रसाद गुप्ता	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	31/12/2024
6.	दिनेश कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31/01/2025
7.	राजीव कुमार नं.-1	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31/01/2025
8.	मुन्ना प्रसाद	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	31/01/2025
9.	सुधीर कुमार नं.-1	सहायक पर्यवेक्षक	31/01/2025
10.	अनिल कुमार नं.-2	पर्यवेक्षक	31/03/2025
11.	त्रिगुण कुमार	पर्यवेक्षक	31/03/2025

"उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो
न जाने किस गली में जिन्दगी की शाम हो जाए"

-बशीर बद्र

तनाव को कम करता है माफी देना

सतीश चंद्रा
सेवानिवृत सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हमें अपने जीवन में मन की शक्ति और शांति बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहना चाहिए। जीवन में तनाव एक बहुत बड़ा अवरोध का काम करता है और तनाव को कम करने में दूसरों को माफ कर देना अच्छा कार्य है ।

माफी केवल दूसरों को राहत देने का कार्य नहीं है बल्कि यह स्वयं के मन को हल्का करने और मानसिक शांति प्राप्त करने का एक प्रभावी तरीका भी है। तनाव में कमी होने से किसी प्रकार का नकारात्मक विचार का जन्म नहीं होता है। जब हम किसी से नाराज होते हैं या किसी की गलती को दिल में दबाए रखते हैं, तो यह तनाव और नकारात्मकता को जन्म देता है। लेकिन जब हम क्षमा कर देते हैं, तो यह मन को हल्का कर देता है और भावनात्मक शांति प्रदान करता है। इसलिए व्यक्ति को हमेशा तनाव को कम करने का उपाय करना चाहिए।

मन में किसी भी प्रकार के नकारात्मक भावना को नहीं बढ़ने देना चाहिए, नहीं तो जब हम किसी की गलती को पकड़कर बैठते हैं, तो यह हमारे भीतर क्रोध और नकारात्मकता को जन्म देता है। इससे बचने के लिए माफी के विचार को भी समझना चाहिए। माफी देने से हम इस बोझ से मुक्त होकर मानसिक रूप से स्वस्थ महसूस करते हैं। जब हम किसी को माफ कर देते हैं, तो हमारे मन से नाराजगी और कड़वाहट कम होती है। यह तनाव के स्तर को घटाकर मानसिक शांति बढ़ाने में मदद करता है। माफी न केवल तनाव कम करता है बल्कि रिश्तों को भी सुधारता है। यह संचार और आपसी समझ को बढ़ावा देता है। जिससे पारिवारिक और सामाजिक संबंध मजबूत होते हैं। शोध बताते हैं कि माफी देने से रक्तचाप नियंत्रित रहता है, हृदय स्वस्थ रहता है और नींद की गुणवत्ता में सुधार होता है। नकारात्मकता और गुस्सा शरीर पर बुरा प्रभाव डालते हैं, जबकि माफी तनाव को कम करके शरीर को राहत देती है। जब हम माफी देते हैं, तो हम खुद को एक बड़ा और समझदार व्यक्ति महसूस करते हैं। यह आत्म-संतोष और आंतरिक खुशी को बढ़ाता है, जिससे जीवन अधिक सुखमय बनता है।

माफी देना केवल दूसरों के लिए नहीं, बल्कि अपने लिए भी आवश्यक है। यह न केवल तनाव को कम करता है बल्कि मानसिक शांति, बेहतर संबंध और स्वस्थ जीवन प्रदान करता है। इसलिए, हमें माफी देने की आदत विकसित करनी चाहिए ताकि हम अपने जीवन को अधिक खुशहाल और तनाव मुक्त बना सकें। माफ करना कोई कमजोरी नहीं, बल्कि आंतरिक शक्ति और आत्मिक शांति का प्रतीक है। उत्तम मानसिक स्वाथ्य के लिए जीवन के दृस्टिकोण को सकारात्मक रखना आवश्यक है तभी मानसिक शांति प्राप्त होगी।

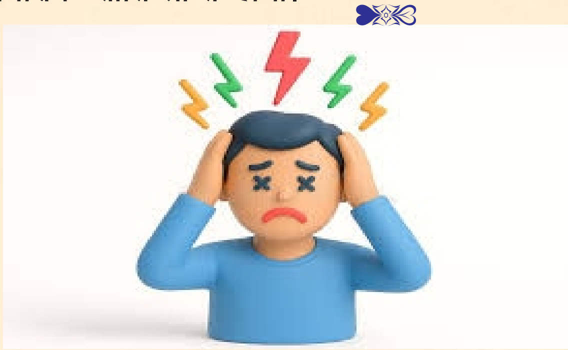

परमात्मा का साक्षात्कार

कुमारी पल्लवी

चारों तरफ रंग-बिरंगे फूल हैं, हर तरफ हरियाली दिख रही है, उन फूलों की खुशबू से पूरी बगिया महक उठी है। पेड़ों पर बहुत सारी छोटी-छोटी चिड़िया चह चहा रही है और फूलों पर रंग-बिरंगी तितलियां मंडरा रही हैं । अचानक से एक बहुत सी प्यारी तितली पलक के सामने उड़ती हुई आयी। पलक उसे पकड़ने के लिए उसके पीछे-पीछे दौड़ी। अरे रुको! मेरे पास आ जाओ मैं तुम्हें अपना दोस्त बनाना चाहती हूं । तितली उड़ते हुए बहुत आगे निकल गई और पलक भी उसका पीछा करते हुए बहुत आगे निकल गई ।

अचानक उसने देखा कि सामने से बहुत तेज प्रकाश निकल रहा है और एक अलग तरह की अनुभूति मिल रही है । उस प्रकाश से शांति, शीतलता और आनंद की अनुभूति हो रही थी। वह बस आगे बढ़ती ही जा रही थी तभी अचानक पानी की कुछ बुँदे उसके चेहरे पर गिरी और वह नींद से जागी, उसके पिताजी उसे जगा रहे थे - उठ जा लाडो, देख सुबह हो गयी, तुझे तैयार होकर स्कूल भी जाना है, तेरा भाई उठ गया है ।

पलक नौ साल की थी, उसका भाई उससे चार साल छोटा था। दोनों भाई -बहन में बहुत प्यार था। पिताजी उसे "लाडा" कहकर पुकारते थे। पिताजी की फलों कि दुकान थी। जिसमें वह उनके कामों में हाथ भी बटायाँ करती थी। वह जितनी प्यारी थी उतनी ही नेक दिल की भी थी। लेकिन माँ के प्यार से वो बहुत जल्दी वंचित हो गई थी। जब वह छः वर्षो की थी उसी समय उसकी माँ चल बसी। तबसे पिताजी ने ही दोनों भाई-बहन का घ्यान रखा । वे बहुत ही प्यार से दोनों की परवरिश कर रहे थे। वे धार्मिक विचार के थे, वे ईश्वर के प्रति बहुत आस्था रखने वाले थे।वे हमेशा बच्चों को भी यही समझाते - बच्चों सबका मालिक ईश्वर है और हम सब उसकी संतान हैं। हमें हमेशा ईश्वर की याद में रह कर अच्छे कर्म करना चाहिए।दोनों बच्चे भी अपने पिताजी की हर बात मानते। पलक को पढ़ाई में बहुत मन लगता था। वह बड़ी होकर अफसर बनना चाहती थी तथा गरीबों और असहाय लोगों की मदद करना चाहती थी। इसी तरह कई वर्ष बीत गए। आज पलक का दसवीं की परीक्षा का रिजल्ट आने वाला था । वह अपने कमरे में सो रही थी की अचानक से फोन की घन्टियाँ बजने से उसकी नींद टूट गई। उसने फोन उठाया तो उसकी टीचर उसे बधाई देने लगी बधाई पलक ! आप इस शहर में टॉप आए हो, न्यूज पेपर में आपका नाम फोटो के साथ सबसे ऊपर है।मुझे पता था आप मेरा नाम जरूर एक दिन रोशन करोगी फिर उसके पिताजी आए उन्होंने उसे गले से लगाकर कहा मुझे पता था कि मेरी लाडो एक दिन जरूर मेरा नाम रोशन करेगी। आज तूने मेरा सर गर्व से ऊँचा कर दिया लेकिन सबसे ज्यादा खुशी मुझे तब होगी जब तू बहुत बड़ी अफसर बनेगी। मुझे यकीन है तु एक दिन बहुत बड़ी अफसर बनेगी। पलक ने अपने आगे की पढ़ाई करने के लिए नए कॉलेज में दाखिला लिया। फिर तन-मन से पढ़ाई में जुट गई। कुछ महीने बाद अचानक से उसके पिताजी की तबीयत खराब हो गई । डॉक्टर को दिखाया तो पता चला कि वे ज्यादा दिन नहीं रह पाएंगे। पलक के मानो पैरों तले जमीन खिसक गई। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करें तभी उसका भाई अनुज आया और बोला दीदी मैं हूं ना तुम चिंता मत करो अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो। मैं सब संभाल लूंगा पिताजी को भी और दुकान को भी। पलक ने प्यार से उसके सिर पर हाथ रखकर कहा "अनुज तुम अभी छोटे हो। तुम कैसे ये सब संभाल पाओगे। हम दोनों मिलकर पिताजी का ध्यान रखेंगे और दुकान भी संभालेंगे। तुम फिक्र मत करो, मैं पढ़ाई भी जारी रखूंगी और पिताजी का सपना भी पूरा करूंगी । हमारी जिंदगी में कोई चुनौती

आती है तो उसका डटकर सामना करना चाहिए। सफलता की सीढ़ियों के बीच में रोड़े तो आएंगे ही ना। यदि हम उससे डर के पीछे हो गए तो आगे कैसे बढ़ेंगे, इसलिए चुनौतियों का सामना करो और आगे बढ़ो। पिताजी ने भी हमें यही सिखाया है- "हिम्मते मर्दा मददे खुदा"।

फिर दोनों भाई-बहन ने मिलकर सब कुछ संभाल लिया। पलक सुबह उठकर सारे काम करती फिर पिताजी को दवाई देकर कॉलेज पढ़ाई करने निकल जाती । पलक पढ़ने में तो तेज थी ही और साथ ही साथ विनम्र भी थी। वह सभी शिक्षकों का आदर सम्मान करती जिससे सारे शिक्षक भी उसका बहुत सम्मान करते। कॉलेज से आने के बाद भाई के साथ दुकान पर लग जाती फिर घर जाकर पिताजी के पास थोड़ी देर बैठती, उनसे बाते करती, उन्हें हँसाती, फिर सबके लिए रात का खाना बनाकर खुद पढ़ने बैठ जाती ।

पिताजी को दोनों बच्चों पर काफी गर्व हो रहा था कि इन परिस्थितियों में भी दोनों बच्चे कितनी सरलता से सब कुछ संभाल रहे हैं। पलक ने अब स्नातक की पढ़ाई पूरी कर ली थी। उसे स्नातक में भी बहुत अच्छे नंबर आए थे। उसी रात पिताजी ने पलक को अपने पास बुलाया और कहा लाडो तुम्हारे असली पिता परमपिता परमात्मा है, जिसने हम सबको अपना पाठ प्ले करने भेजा है, जो हर क्षण हर पल हमारे साथ है, हमें देख रहा है । इसलिए मैं न भी रहूं तो तुम कभी मत घबराना, एकांत में बैठकर आंखें बंद कर उस परमपिता को याद करना। उन्हें प्यार से पुकारना तो वे तुम्हारे सामने आ जाएंगे और तुम्हारी मदद अवश्य करेंगे। फिर उसी रात उसके पिताजी चल बसे । पलक को अपने पिताजी की कही हुई सारी बातें याद आ रही थी। उसने हिम्मत नहीं हारी और लगातार मेहनत करती रही।

एक दिन वह बहुत उदास लग रही थी, उसे पिताजी की याद आ रही थी तभी उनकी कही बातें उसे याद आई । वह एकांत में बैठ गई और अपनी आंखें बंद कर पिताजी को याद करने लगी तभी उसे तेज प्रकाश दिखाई दिया और उस प्रकाश में एक अलग तरह की अनुभूति मिल रही थी । वह प्रकाश उसे शांति, शीतलता और आनंद प्रदान कर रहा था पलक को समझ में आ गया था कि पिताजी हमेशा मेरे साथ ही रह रहे थे। यह महसूस होते ही वह अपने सपने को पूरा करने के लिए जी-जान से जुट गई और कुछ समय के बाद उसने यूपीएससी की परीक्षा पास की और अफसर बन गई ।इस तरह उसने अपने पिताजी के सपने को साकार किया।

द्वारा प्रदीप कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

बदलते पर्यावरण में कृषि पद्धतियों और तकनीकों में बदलावः एक आवश्यकता

सत्यप्रकाश सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कृषि हमेशा मानव सभ्यता की रीढ़ रही है, लेकिन पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ अब पर्यावरण के साथ टकरा रही हैं। पर्यावरणीय मुद्दे जैसे जलवायु परिवर्तन, मिट्टी का अपरदन, पानी की कमी, और जैव विविधता की हानि कृषि पद्धतियों में बदलाव की आवश्यकता को और भी बढ़ा रहे हैं। आइए, इन प्रमुख समस्याओं पर एक नजर डालते है।

जलवायु परिवर्तनः-

जलवायु परिवर्तन अब कृषि के लिए सबसे बड़ा खतरा बन गया है। बढ़ती वैश्विक तापमान, बदलते मौसम पैटर्न, सूखा, बाढ़ और हीटवेव जैसे चरम मौसम घटनाएँ किसानों के लिए फसलों की उपज को पूर्वानुमानित करना और योजना बनाना कठिन बना रही हैं। जिन क्षेत्रें में पहले ही मौसम की चरम घटनाओं का सामना किया जा चुका है, वहां यह बदलाव फसलें पूरी तरह से नष्ट कर सकते है, जिससे खाद्य संकट और कीमतों में वृद्धि हो सकती है।

कृषि, जलवायु परिवर्तन में योगदान भी करती है। इस क्षेत्र में 25% तक वैश्विक ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन का योगदान होता है, खासकर पशुपालन, रासायनिक उर्वरकों का उपयोग और कृषि विस्तार के लिए वनों की कटाई से।

मिट्टी की अपरदन-

स्वस्थ और उर्वर मिट्टी फसलों की खेती के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, लेकिन समय के साथ अत्यधिक खेती पद्धतियों ने मिट्टी की अपरदन, पोषक तत्वों की कमी, और मिट्टी की संरचना में नुकसान किया है। एक ही फसल को बार-बार उगाना (मोनोक्रॉपिंग) और रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग मिट्टी की पानी को संचित करने की क्षमता, पौधों के लिए पोषक तत्वों का आदान-प्रदान और लाभकारी सूक्ष्मजीवों को नुकसान पहुँचाता है। मिट्टी का क्षरण धीमा हो सकता है, लेकिन इसके दीर्घकालिक प्रभाव हो सकते हैं, जिससे भूमि कृषि के लिए अनुपयुक्त हो जाती है और उपज में कमी आ जाती है।

पानी की कमीः-

पानी खेती के लिए जीवन रेखा है, लेकिन वैश्विक जल संसाधन अब बढ़ती जनसंख्या के कारण दबाव में हैं। कृषि 70% पानी का उपयोग करती है और कई क्षेत्रों में पानी की कमी हो रही है। सिंचाई प्रणाली पर निर्भर क्षेत्रें में पानी के अत्यधिक उपयोग से जलाशयों का क्षय और ताजे जल परिस्थितिकी प्रणालियों का नुकसान हो सकता है। पानी की कमी विशेष रूप से चिंता का विषय है, क्योंकि खाद्य उत्पादन की मांग लगातार बढ़ रही है। सूखा-प्रवण क्षेत्रें में पहले ही पानी की कमी के कारण फसलें प्रभावित हो रही है, जिससे खाद्य सुरक्षा संकट पैदा हो रहा है।

जैव विविधता की हानिः-

कृषि ने वैश्विक जैव विविधता में गिरावट का एक प्रमुख कारण बना दिया है। मोनोकल्चर (एक ही फसल का बड़े पैमाने पर उगाना) परिस्थितिकी तंत्र को रोगों, कीटों और बदलते जलवायु परिस्थितियों के प्रति संवेदनशील बना देता है। पौधों की विविधता में कमी परिस्थितिकी तंत्र के संतुलन को प्रभावित करती है, जिससे प्राकृतिक परागण और कीट नियंत्रण पर असर पड़ता है। इसके अतिरिक्त,कृषि भूमि के लिए वनों की अंधाधुंध कटाई से अनेक प्रजातियों के लिए आवास का नुकसान होता है, जिससे जैव विविधता का नुकसान और बढ़ जाता है।

3.आधुनिक कृषि में उभरती तकनीकियाँः

इन पर्यावरणीय समस्याओं को घ्यान में रखते हुए,

ऐसे कृषि पद्धतियों की आवश्यकता है जो सतत और उत्पादक दोनों हो। सौभाग्य से,कृषि तकनीकों में नवाचार पर्यावरण के अनुकूल और अधिक टिकाऊ कृषि के लिए रास्ता दिखा रहा है। यहाँ कुछ ऐसी तकनीकियाँ हैं जो इन समस्याओं का समाधान कर सकती हैं:-

सतत कृषि पद्धतियाँ:-

सतत खेती के भविष्य के केंद्र में है। कई पद्धतियाँ हैं जो पर्यावरणीय क्षति को कम करते हुए फसल की उपज बढ़ा सकती हैं।

- पुनर्जनन कृषि:- यह तरीका मिट्टी की सेहत को बहाल करने पर केंद्रित है, जैसे किकवर क्रॉपिंग, फसल चक्र और नो-टिल फार्मिंग। ये तरीके मिट्टी की नमी बनाए रखने, संरचना में सुधार करने और पोषक तत्वों को बहाल करने में मदद करते हैं।
- एग्रोफॉरेस्ट्री:- कृषि प्रणालियों में पेड़ और झाड़ियाँ एकीकृत करने से जैव विविधता और परिस्थितिकी तंत्र में लचीलापन बढ़ता है। पेड़ मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाते हैं, पानी की पकड़ में मदद करते हैं, और पर्यावरण के लिए कार्बन संग्रहण करते हैं।
- रासायनिक उपयोग में कमी: रासायनिक कीटनाशकों और उर्वरकों के उपयोग को घटाने से मिट्टी की सेहत और जैव विविधता में सुधार हो सकता है। किसान जैविक नियंत्रण विधियों का उपयोग करने लगे हैं, जैसे कि प्राकृतिक शिकारियों को कीटों का शिकार करने के लिए लाना।

सटीक कृषि (Precision Agriculture)

तकनीकी नवाचार कृषि में एक प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं। सटीक कृषि डेटा और तकनीकी समाधानों का उपयोग करके दक्षता और अपशिष्ट को कम करता है।

सेंसर और ड्रोन:- ये प्रौद्योगिकियाँ किसानों को फसल की सेहत, मिट्टी की नमी और पोषक तत्वों की स्थिति का वास्तविक समय में निगरानी करने की अनुमति देती है। विस्तृत डेटा प्राप्त करके किसान उर्वरक, पानी और कीटनाशकों का सटीक रूप से उपयोग कर सकते हैं, जिससे अपशिष्ट कम होता है।

जी.पी.एस. और स्वचालित मशीनरी: जी.पी. एस. गाइडेड उपकरण किसानों को सटीक रूप से फसलें लगाने, उर्वरक देने और कटाई करने की सुविधा प्रदान करते हैं, जिससे मिट्टी में घनत्व कम होता है और संरचना बनाए रखी जाती है।

ऊर्ध्वाधार खेती और शहरी कृषि:-

शहरी क्षेत्रें में भूमि की कमी और बढ़ती जनसंख्या के कारण, ऊर्ध्वाधार खेती एक व्यवहार्य समाधान बनकर उभरी है। इस तकनीक में फसलों को स्तंभों या नियंत्रित इनडोर वातावरण में उगाया जाता है, जो पारंपरिक खेती की तुलना में कम पानी, कीटनाशक और भूमि का उपयोग करता है।

इसके अलावा, शहरी कृषि जैसे सामुदायिक बाग और छतों पर खेती शहरों में खाद्य उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए काम कर रहे हैं, जो स्थानीय खाद्य प्रणालियों को अधिक टिकाऊ और लचीला बनाता है।

पानी की बचत करने वाली तकनीकियाँ:-

पानी की कमी को हल करना कृषि का एक महत्वपूर्ण पहलू है। नई सिंचाई प्रणालियाँ जैसे ड्रिप सिंचाई और हाइड्रोपोनिक्स (न्यूट्रिएंट-रिच पानी में पौधों को उगाना) किसानों को पानी का अधिक कुशलतापूर्वक उपयोग करने और अपशिष्ट कम करने में मदद करती हैं।

इसके अतिरिक्त, वर्षा जल संचयन और पानी पुनर्चक्रण प्रणाली का उपयोग पानी की बचत को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है।

जैव प्रौद्योगिकी और आनुवंशिकी:-

जैव प्रौद्योगिकी और आनुवंशिकी में प्रगति जलवायु परिवर्तन और खाद्य सुरक्षा पर काबू पाने के लिए समाधान प्रस्तुत करती है। ऐसी फसलों का विकास किया जा सकता है जो सूखा, कीटों और

रोगों के प्रति अधिक प्रतिरोधी हों, जिससे रासायनिक इनपुट की आवश्यकता कम होती है।

निष्कर्ष: एक सतत भविष्य की ओर हम जिस वैश्विक पर्यावरणीय संकट का सामना कर रहे हैं, उसमें कृषि पद्धतियाँ भी बदलनी होंगी। सतत और नवोन्मेषी कृषि तकनीकों को अपनाकर हम जलवायु परिवर्तन, मिट्टी की अपरदन, पानी की कमी और जैव विविधता की हानि जैसी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं, साथ ही बढ़ती खाद्य आपूर्ति को पूरा भी कर सकते हैं। सही समर्थन, शोध में निवेश और नई प्रौद्योगिकियों को अपनाकर, हम कृषि को एक समाधान के रूप में बदल सकते हैं जो न केवल पर्यावरण बल्कि मानवता की भलाई के लिए भी काम करे। सही समर्थन, शोध में निवेश और नई प्रौद्योगिकियों को अपनाकर, हम कृषि को एक समाधान के रूप में बदल सकते हैं जो न केवल पर्यावरण बल्कि मानवता की भलाई के लिए भी काम करे। निश्चय ही यह पर्यावरण अनुकूल, अतिउत्पादक और सतत कृषि विकास की ओर एक ठोस कदम होगा।

बिहार कोकिला - शारदा सिन्हा

शंकरा नंद झा, सहायक निदेशक
(रा. भा.)

नवंबर 2024 के प्रथम सप्ताह में बिहार के अधिकांश घरों में छठ महापर्व की तैयारी चल रही थी। किसी के मोबाइल में "कांच ही बांस के बहंगिया, बहंगी लचकत जाए......" बज रहा था तो किसी के घर में साउंड बॉक्स में "पहिले पहिल हम कईनी.. छठी मईया बरत तोहार......" की मधुर संगीत बज रहा था दूर नदी के किनारे छठ घाट बनाने की तैयारी चल रही थी और लाउडस्पीकर पर "केलवा के पात पर उगेलन सुरुजमल झांके झुक... ......" की आवाज आ रही थी। बिहार के हर गाँव, हर मुहल्ले में छठ महापर्व को ले कर एक अलग ही उत्साह था। तभी टेलीविजन में एक ब्रेकिंग न्यूज चलता है "बिहार की कोकिला" नाम से मशहूर गायिका शारदा सिन्हा नहीं रहीं......"बिहार सहित समूचा देश स्तब्ध रह जाता है। छठ महापर्व और शारदा सिन्हा जी के लोकगीत एक दूसरे के पर्याय बन चुके थे। छठ महापर्व के दौरान ही उनके निधन की खबर से एक अलग प्रकार की उदासी छा जाता है। क्या महिला, क्या पुरुष क्या बच्चे सब लोग अपने-अपने प्रकार से उन्हें श्रद्धांजली देने में लग जाते हैं। अधिकतर लोगों के व्हाट्सऐप स्टेटस और फेसबुक स्टोरी उस महान आत्मा को विनम्र श्रद्धांजली के रूप में अपडेट हो चुके थे।

शारदा सिन्हा: लोकसंगीत की सुरसरिता

भारतीय लोक संगीत में अपनी मधुर और भावनात्मक आवाज से एक अमिट छाप छोड़ने वाली प्रसिद्ध गायिका शारदा सिन्हा का नाम सम्मान और आदर के साथ लिया जाता है। बिहार और उत्तर भारत के पारंपरिक लोकगीतों को जन-जन तक पहुँचाने में उनका योगदान अविस्मरणीय है। उन्होंने छठ गीतों के साथ-साथ विवाह, सोहर, कजरी, झूमर, और अन्य पारंपरिक लोकगीतों को अपनी सुमधुर आवाज से नया जीवन दिया।

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा:-

शारदा सिन्हा का जन्म 1 अक्टूबर 1952 को बिहार के सुपौल जिले के हुलास गाँव में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा बिहार में ही हुई। उन्होंने संगीत में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए पटना विश्वविद्यालय में अध्ययन किया और भारतीय शास्त्रीय संगीत में विशेषज्ञता हासिल की। संगीत के प्रति उनका झुकाव प्रारंभ से ही था, और उन्होंने इसे अपनी साधना एवं परिश्रम से एक उत्कृष्ट स्तर तक पहुँचाया।

संगीत कैरियर और लोकप्रिय गीत:-

शारदा सिन्हा की गायकी में एक अनूठी मिठास और भावनात्मक गहराई होती है, जो श्रोताओं को सीधे उनके हृदय से जोड़ देती है। उन्होंने अनेक लोकगीतों को अपनी आवाज दी, लेकिन उन्हें विशेष प्रसिद्धि उनके छठ गीतों से मिली। उनके गाए हुए कुछ लोकप्रिय गीत इस प्रकार हैं:

'पार करे दे घाट'

- **'केलवा के पात पर उगेलन सूरज मल**
- **'हो दीनानाथ'**
- **'सजना हमार नइहर छोड़ा दे'**
- **'कइसन भइल पतार'**

इन गीतों ने न केवल बिहार और उत्तर प्रदेश में बल्कि पूरे भारत में अपनी जगह बनाई। छठ पूजा के समय उनके गीतों की गूंज हर घर में सुनाई देती है।

इसके अतिरिक्त शारदा सिन्हा ने बॉलीवुड को भी कई हिट गाने दिए हैं। इसमें सलमान खान की फिल्म "मैंने प्यार किया" का "कहे तोसे सजना...." और गैंग्स ऑफ वासेपुर में 'तार बिजली से पतले ...' काफी लोकप्रिय हुए।

सम्मान और उपलब्धियाँ:-

25 जनवरी 2025 को जब पद्म पुरस्कारों की घोषणा की गई तो जिन 7 लोगों का चयन पद्म विभूषण पुरस्कार हेतु किया गया था उनमें से एक नाम श्रीमती शारदा सिन्हा का भी था। जिन्हे मरणोपरांत इस पुरस्कार से विभूषित किया गया था। श्रीमती शारदा सिन्हा को उनके अमूल्य योगदान के लिए पहले भी कई अन्य प्रतिष्ठित सम्मानों से भी नवाजा गया था। इनमें प्रमुख रूप से निम्नलिखित पुरस्कार शामिल हैं:

साभार- विकिपिडिया

पद्म विभूषण – 2025
पद्म भूषण – 2018
पद्म श्री – 1991

- पद्म भूषण (2018)- भारत सरकार द्वारा दिया जाने वाला तीसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान।
- पद्म श्री (1991)- लोकसंगीत में उनके अतुलनीय योगदान के लिए सम्मानित।
- संगीत नाटक अकादमी अवार्ड (2000), संगीत, नाट्य तथा ड्रामा के क्षेत्र में दिया जाने वाला सर्वोच्च पुरस्कार
- महादेवी वर्मा सम्मान - साहित्य एवं कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए।
- बिहार गौरव सम्मान - बिहार सरकार द्वारा प्रदान किया गया।

इसके अलावा, उन्होंने बॉलीवुड में भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। 'मैंने प्यार किया' फिल्म में उनका गाया हुआ गीत' का हेरी ओ सखी ' बहुत लोकप्रिय हुआ था।

शारदा सिन्हा और लोक संगीत का योगदानः-

शारदा सिन्हा ने लोक संगीत को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई। उन्होंने लोकगीतों को आधुनिक संगीत के साथ समायोजित करके उन्हें नई ऊंचाइयों तक पहुँचाया। उनकी आवाज में एक विशेष आकर्षण है, जो भारतीय परंपरा और संस्कृति की झलक प्रस्तुत करता है।

शारदा सिन्हा भारतीय लोकसंगीत की एक महान विभूति रही हैं। उनके गीत न केवल संगीत प्रेमियों के लिए मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि लोकसंस्कृति और परंपराओं को जीवित रखने का एक सशक्त माध्यम भी हैं। उनकी मधुर आवाज और सादगीपूर्ण व्यक्तित्व ने उन्हें जन-जन का प्रिय बना दिया है। वे आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणाश्रोत बनी रहेंगी और उनका योगदान भारतीय संगीत जगत में सदैव अमर रहेगा।

शेयर बाजार और मेरा अनुभव

विकास कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

शेयर बाजार........ एक ऐसी दुनिया, जो बाहर से देखने में जितना आकर्षक लगती है, अंदर से उतनी ही पेचिदा। जब मैनें पहली बार शेयर बाजार में कदम रखा , तो मन में उत्साह और डर दोनों ही था। उत्साह इस बात की थी कि अब मैं भी उन लोगों में शामिल हो जाऊंगा, जो "मार्केट" से पैसे बनाते हैं और डर इस बात की कहीं अपनी गाढ़ी कमाई गवाँ न दूँ।

पहले कुछ दिन सिर्फ देखने-समझने में ही बीते। हर लाल हरी रेखा-हर चढ़ता-गिरता चार्ट मेरे लिए किसी रहस्य से कम न था। लोग कहते है कि कभी किसी टिप्स के भरोसे निवेश कर दिया, तो कभी डर के कारण घाटे में ही बेच दिया। धीरे-धीरे मुझे समझ आने लगा कि खेल भावनाओं का भी है। लालच और डर दोनों सबसे बड़े दुश्मन होते हैं। यहाँ जब भी मैंने बिना सोचे समझें जल्दबाजी में निर्णय लिया, नुकसान ही हुआ। जब तथ्यों के आधार पर सोच समझ कर कदम बढ़ाया, तब बेहतर परिणाम मिलें।

मुझें याद है, जब मैनें दो कंपनियों में निवेश किया था। पहला अनुभव कुछ खास अच्छा नहीं रहा और इसके शेयर तेजी से गिरने लगें। मैंने इसको देर से बेचा, जिससे नुकसान अधिक उठाना पड़ा। दुसरी ओर कंपनी उससे उम्मीद से बेहतर नतीजे दिए और इसके शेयर तेजी से उपर चढ़ गए लेकिन मैनें इसे जल्द ही बेच दिया क्योकि इसका PE 70 तक पहुंच गया था, जिससे लाभ कम हुआ। अर्थात, नुकसान के समय देर तक इंतजार किया और लाभ के समय जल्दी कर दी।

इन अनुभवों ने मुझे सिखाया कि किसी भी स्टॉक के मूल्यांकन के समय केवल देखकर निर्णय लेना उचित नहीं है। यदि किसी स्टॉक का PE उच्च दिखाई दे रहा है तो जरूरी है कि पिछले परिणाम के बाद प्रबंधन ने concall में क्या मार्गदर्शन दिया है इसे ध्यानपूर्वक समझा जाए।

जब मैंने पहली बार किसी कंपनी का Concall सुना, तो यह अनुभव नया था। मैनंजमेंट द्वारा विवरण और विश्लेषकों के सवालों से मुझे समझ में आया कि कंपनी भविष्य में क्या योजनाएँ बना रही है।

1. प्रबंधन का आत्मविश्वास:- जब प्रबंधन किसी नई परियोजना, उत्पाद या विस्तार योजनाओं के बारें में आत्म विश्वास से बात करता है तो यह संकेत देता है कि वे अपनी योजनाओं को लेकर स्पष्ट है।
2. मार्गदर्शन (Guidance):- यदि कंपनी भविष्य में राजस्व (Revenue), लाभ (Profit) या मार्जिन में वृद्धि की उम्मीद करती है, तो इसका असर स्टॉक के मुल्यांकन पर होता है।।
3. खर्च और विस्तार:- मैंने ध्यान दिया कि जब कोई कंपनी अपने पुंजीगत व्यय (Capital) में वृद्धि करती है तो इससे निवेशकों को कंपनी की दीर्घकालीन स्थिरता का अंदाज मिलता है।
4. प्रतिस्पर्धात्मक लाभ:- जब प्रबंधन अपने उद्योग में प्रतिस्पर्धा की स्थिति और अपनी रणनीतिक योजना स्पष्ट करता है, तो इससे निवेशकों को कंपनी की दीर्घकालीन स्थिरता का अंदाज मिलता है।

PPT से मुझे कंपनी के व्यवसाय की बारीकियों को समझने में मदद मिली खासकर:

- ऑपरेटिंग मार्जिन (OPM) और नेट प्रॉफिट मार्जिन, (PM) की प्रकृति
- भविष्य की विस्तार योजनाएँ और नई परियोजनाएँ
- पिछली तिमाही की तुलना में YoY और QoQ वृद्धि

मेरी निवेश रणनीति में बदलाव:-

अब मेरा नजरिया बदल चुका है। शेयर बाजार मेरे लिए एक साधन है जहाँ धैर्य सबसे बडा हथियार है और सबसे बड़ी संपत्ति। अब मुझे बाजार से डर नहीं लगता । हर गिरावट मुझे एक नए अवसर की तरह लगती है, क्योंकि मैंने यह समझ लिया है कि धैर्य और सही जानकारी से ही सफलता मिलती है।

अब जब भी मैं किसी स्टॉक में निवेश करता हूँ तो:-

1. कंपनी की मूलभूत ताकत (Fundamentals) की जाँच करता हूँ।
2. Concall में दी गई भविष्य की संभावनाओं और मार्गदर्शन का अध्ययन करता हूँ।
3. TTM PE की गणना करता हूँ ताकि वास्तविक मल्यांकन को समझ सकूँ।
4. केवल अफवाहों या टिप्स पर भरोसा नहीं करता। शेयर बाजार एक यात्रा है, जो निरंतर सीखने की मांग करती है। इस यात्रा में सबसे महत्वपूर्ण चीज होती है अपने अनुभव से सीखना।

सेवानिवृत्ति के बाद का जीवन उल्लासपूर्ण और स्वस्थ कैसे हो

सुधीर कुमार
सेवानिवृत सहायक पर्यवेक्षक

सेवानिवृत्ति जीवन का एक नया अध्याय होता है, जो व्यक्ति को आराम, आत्मनिर्भरता और आनंद के साथ जीने का अवसर देता है। सभी कर्मचारी जो सेवा में आता है वो सेवानिवृत भी होता है। इसलिय सभी को सेवानिवृति के लिए मानसिक रूप से तैयार होना चाहिए। यह वह समय होता है जब व्यक्ति व्यस्त दिनचर्या से मुक्त होकर अपनी रुचियों, शौक और स्वास्थ्य पर ध्यान दे सकता है। लेकिन, कई लोगों के लिए यह समय अकेलापन, निष्क्रियता और स्वास्थ्य समस्याओं का कारण भी बन सकता है। अत: सेवानिवृत्ति के बाद का जीवन उल्लासपूर्ण और स्वस्थ बनाए रखने के लिए कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान देना आवश्यक है।

सेवानिवृत्ति को जीवन का अंत नहीं बल्कि नए अवसरों की शुरुआत मानें। सेवा के दौरान अपने कार्यो के निर्वहन में अपने शौक, पारिवारिक जीवन में बहुत कुछ छोडना पड़ता है। परंतु सेवानिवृति के बाद प्रतिदिन की व्यस्त जीवन से छुटकारा मिलता है। इसलिए सेवानिवृति के बाद समाज सेवा, परिवार के साथ समय बिताना, या कोई नया कौशल सीखना जीवन को सार्थक बनाए रखता है और जीवन में आये शून्यता की भरपाई करता है। अब तक जो कुछ भी आपने जीवन में हासिल किया, उसके प्रति ईश्वर को आभार प्रकट करें। इससे मानसिक शांति मिलती है।

स्वस्थ शरीर ही आनंदमय जीवन का आधार होता है। सेवानिवृत्ति के बाद नियमित रूप से स्वास्थ्य को अच्छा रखने वाले क्रियाकलाप में भाग लेना चाहिय। रोजाना टहलना, हल्का व्यायाम, योग और ध्यान करने से शरीर और मन दोनों स्वस्थ रहते हैं। खान-पान में विशेष धयान देने की आवश्यकता होती है। हरी सब्जियाँ, फल, सूखे मेवे, प्रोटीन और फाइबर युक्त भोजन करना चाहिय। अपनी शारीरिक जांच करवा भोजन के बारे में आहार विशेषज्ञ से जरूर सलाह करनी चाहिये । समय-समय पर डॉक्टर से स्वास्थ्य जांच कराते रहना चाहिये ।

अपनों के साथ समय बिताने से मानसिक खुशी बनी रहती है। नई चीजें सीखने से दिमाग सक्रिय रहता है। जैसे कंप्यूटर चलाना, नई भाषा सीखना या संगीत सीखना। क्लब, धाार्मिक कार्यक्रम, सामुदायिक सेवा या वृद्धाश्रम में योगदान दें।
पौधे लगाना, चित्रकारी करना, किताबें पढ़ना आदि से मन प्रसन्न रहता है।

सेवानिवृत्ति के बाद वित्तीय स्थिरता के लिए बचत योजनाओं और पेंशन का सही उपयोग करें। निवेश के लिए वित्तीय सलाहकारों से सलाह लेकर पेंशन तथा अन्य पावना का सही निवेश करना चाहिए। मानसिक शांति और सकारात्मकता के लिए ध्यान, श्रमदान की गतिविधियों में भाग लें। धार्मिक गतिविधियों में संलग्न होकर भगवद गीता, रामायण, साहित्यिक किताबें या अन्य प्रेरणादायक किताबें पढ़ने से आत्मबल बढ़ता है।

सेवानिवृति के उपरांत शारीरिक क्षमता के अनुरूप नए स्थानो पर घूमने जाएँ। पर्यटन करने से मानसिक ताजगी मिलती है और जीवन के नए अनुभव प्राप्त होते हैं।
पहाड़, समुद्र तट, तीर्थ स्थल या गांवों की यात्रा करके आनंद उठाएँ।

सेवानिवृत्ति जीवन का अंत नहीं, बल्कि एक नया और सुंदर आरंभ है। इसे उल्लासपूर्ण और स्वस्थ बनाए रखने के लिए सक्रियता, सकारात्मकता और संतुलित जीवनशैली अपनाना जरूरी है। यह समय आत्म-संतोष, खुशहाली और अपने प्रियजनों के साथ आनंद लेने का होता है। सही दृष्टिकोण और स्वस्थ जीवनशैली अपनाकर इसे सबसे सुखद दौर बनाया जा सकता है। किसी ने सच ही कहा है:- "सेवानिवृत्ति एक नई सुबह है, जहाँ हर दिन को आनंद और उत्साह से जिया जा सकता है।"

बरगद

श्यामदत्त मिश्रा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

राह में देख एक विशाल बरगद
रोक गाड़ी किनारे
मैं उतरा
और देखता गया उसे एक टक
उसकी विशालता
उसका घनापन
उसकी विशाल छाया
उसकी अनगिनत लटकती लटें
विवश करने लगी मुझे कुछ सोचने पर
और फिर डूबा .... तो सोचने लगा
कितनों को देखा होगा इसने
हमारे दादा... परदादा
परदादा के परदादा
या उनके भी दादा... परदादा..!
मैं इन्हीं ख्यालों में था
कि बरगद बोल पड़ा
कहने लगा
हां देखा है मैंने सबको
वे सब मेरी ही तो छाँव में खेला करते थे
उनके झूले
मेरी मजबूत लटें थी
एक साथ लटक जाते थे कई
भरोसा था उन्हें मुझपर
हवा में झूलते थे वे निडर होकर
यहीं तो होते थे उनके सारे खेल
सो भी जाते थे यहीं थक कर
उनके घर को था पता
कहां मिलेंगे वे
सबको देखा है मैंने...!
वे सब बहुत मानते थे मुझे
बरगद दादा
बरगद दादा
कहते थे मुझे
गाय चारा चर कर
बैल खेतों से थक कर
बकरी, भेड़, गिलहरी
मेरे ही पास तो सुस्ताते थे
दिन भर यहीं चौकड़ी भरते थे
दूर दूर तक था नाम मेरा
किसी धन्नासेठ की कोठी की तरह
पथिकों के लिए खास चिन्ह था मैं
और आरामगाह भी
पहचान दूर दूर तक थी मेरी
गुजरता हर पथिक
बिना बैठे मेरे पास
बढ़ता नहीं था आगे
आज भी तुम्हारे फुटपाथ पर
कहीं कहीं लगे शेड
कर नहीं सकते बराबरी मेरी
मेरे पास तो
दूषित वायु भी इसलिए आती है
कि शुद्ध हो जाए
तुम आए हो
तो कुछ देर ठहरो
तुम्हारे विचार भी शुद्ध होने लगेंगे
चिरशांति का अनुभव करोगे
अरे कितनी समस्यायों का निदान
कितनी पंचायतों के फैसले
होते थे मेरी ही छाँव में
पहले विचार खुले थे
तो बैठते थे लोग खुली हवा में
विचार कुंद हुए
लोग कमरे में चले गए
सुना है वहां
आदमी चला जाता है
मगर फैसला नहीं आता
यहां तो मिनटों... घंटों में
मामला निपट जाता था
और हां
दोनों पक्ष खुशी खुशी जाते थे यहां से
तब... पंच परमेश्वर कहलाते थे
अब तो पंच प्रपंच हो गए.......
पहले तन हृष्ट पुष्ट था
मन कोमल था
आज मन सख्त हो गए

तन कोमल।
यहां चलती थी कभी कई पाठशालाएं
सिखाया जाता था उन्हें संस्कार
करते थे वे पर्यावरण से बहुत प्यार
वे बटोरते थे हमारी सुखी लकड़ियां
उन्हें सख्त मनाही थी
तोड़ने की हमारी हरी डालियां
मगर अब वो बात नहीं रहीं
अब कोई नहीं कहता मुझे बरगद दादा
बच्चे नहीं खेलते मेरी लटों से
कोई पथिक भी कहां रुकता है यहां
कभी अहम हिस्सा होता था तुम्हारा
आज अकेले जीता हूं
कोई अहमियत नहीं अब मेरी
हां महिलाएं
आज भी पूजती हैं मुझे
चारों ओर घूम घूम मेरे
धागे से बांधा मुझे
सुहाग की दीर्घ आयु
मांगती है मुझ से
बांधा मेरी पत्तियां अपने जुड़े में
चलती हैं जब इतराकर
दिल भर आता है मेरा
इतना सम्मान पाकर
फिर रोम रोम मेरा
लगता है देने आशीष उन्हें
लेकिन अब दिन हो गए हैं पूरे मेरे
कुछ दिनों का हूं बस
कुछ दिन पहले
कुछ अफसर लोग आए थे यहां
मुआयना करने
कह रहे थे
विकास आ रहा है यहां
जिसके पथ का मैं बाधक हूं।
उसे भूमि बंजर चाहिए
और मैं ठहरा हरा-भरा
सुना है... वह चलता है जब
बड़ी बड़ी मशीनें चलती है संग उसके
जो क्षण भर में कर देती है ढेर हमें
बड़ी बेरहमी से..!
मेरे कई साथी
हो चुके हैं ढेर
इस बार नंबर.....मेरा है
भले ही हो कुछ देर सबेर...!
सुन इतना
भावुक हो गया मन मेरा
जो करता आया सेवा वर्षों से
पशु पक्षी मानव सबका...!
मुक्त न होंगे कभी हम
जिसके कर्ज से
वह अब काटा जायेगा...?
उखाड़ा जायेगा...?
फिर एकाएक
लिपट गया मैं बरगद दादा से
और सहसा निकला
मेरे मुख से
तुम्हारी कीमत पर मिला विकास
खोखला होगा
ढकोसला होगा... दादा
तुम हो... तो हम हैं
तुम गए
तो हम भी न मिलेंगे
लील जाएगा यह विकास हमें भी
और एक दिन
इसी विकास की चीर छाती
तुम जरूर निकलोगे
और देखोगे ढेर... नर कंकालों के...!
गर...दिख भी गए
कुछ चलते फिरते
तो दिखेंगे
टंगे... आर0ओ0 मशीन हवा की
कंधों पर उनके..!
दिन.. वह दूर नहीं
जब ... विकास और विनाश
पर्यायवाची कहलाएंगे...!
बस... इतना कहकर
मैं नम आंखों से
लेकर विदा दादा से
निकल पड़ा वहां से।

प्रभु तरु तर, कपि डार पर

जयप्रकाश मल्ल
सेवानिवृत वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

पुराने लोग बताते हैं कि इस देश में पैंतीस वर्ष की उम्र तक लोग साम्यवादी विचार के होते हैं, पैंतीस से साठ वर्ष तक समाजवादी और साठ की उम्र के पश्चात घोर आस्तिक हो जाते हैं। नारियाँ इसकी अपवाद हैं। आज की स्थिति इसके प्रतिकूल हो गई हैं।आज पैंतीस वर्ष तक के उम्र के लोग ही विवेकहीन आस्तिक भीड़ में बदल रहे हैं। परसाई जी ने अपने निबंध "आवारा भीड़ के खतरे" में इसी ओर इंगित किया था। लिहाजा आस्तिक बनने की प्रक्रिया में मैंने भी अपने इकसठ वर्ष होम कर दिये। प्रभु श्री राम के चरणों में बैठ कर ऐसी शान्ति मिलती है कि पूछिये मत। इस जन्म के शेष अवधि की तकलीफें मसलन मोतियाबिंद,मधुमेह,रक्तचाप, कोलेस्ट्रॉल, गठिया, आदि प्रभु को समर्पित कर निश्चिंत होने की इच्छा थी, साथ ही अगले कुछ जन्मों को सुख शान्ति से भर लेने की लालसा भी। परन्तु ऐसा हो न सका,अवचेतन में तर्क बार-बार मेरी आस्था को खंडित करने का प्रयास करने लगा। आँखों की रोशनी धीरे धीरे कमजोर होने लगी। डॉक्टर मोतियाबिंद का ऑपरेशन शीघ्र करा लेने की सलाह देने लगे। परंतु काका हाथरसी का अनुभव मुझे रोक रखा था।

मोती जैसे दाँत थे, मुख था जैसे इन्दु,
मिले नैन से नैन, हुआ मोतियाबिंद।
हुआ मोतियाबिंद लाभ बतलायें तुमको,
सुघड़ सुंदरी एक, किन्तु दो दीखे हमको।
डॉक्टर बोला आपरेशन कब करवाएगा,
मैंने कहा, भाई मजा किरकिरा हो जायेगा।

मधुमेह ने पंद्रह अगस्त एवं छब्बीस जनवरी के राष्ट्रीय पर्व स्वतंत्रता तथा गणतंत्र दिवस की राष्ट्रीय मिठाई जिलेबी से दूर कर दिया। मधुमेह के कारण मेरे राष्ट्रवाद पर गंभीर प्रश्न खड़े कर दिए जाने का डर सताने लगा। अपने ही देश में देशद्रोही खिताब के साथ जीने की त्रासदी भयभीत करने लगी।

किचेन से पराठे और तली भुनी सब्जियों की महक लालसा से भर देती। परन्तु घर के अन्य सदस्य इन्हें मुझसे दूर ही रखने का प्रयास करते, परन्तु दिल है कि मानता नहीं। कोलेस्ट्रॉल मेरी धमनियों शिराओं में बैठकर मेरी इच्छाओं का सत्यानाश कर रहा था।

रही सही कसर युरिक एसिड ने पूरी कर दी।चना, अरहर,मटर, पालक,मेरी रसना से दूर किये जाने लगे।घुटने, कमर, हाँथ, कंधे असहनीय पीड़ा से भर गए।

शरीर के अंदरूनी रावण के साथ साथ समाज में भी भूख, गरीबी, मंहगाई, बेरोजगारी, नफरत, विद्वेष, जैसे रावण अपना सिर उठाने लगे थे।इन्हीं प्रतिकूल परिस्थितियों से शिकस्त खाकर , मैंने प्रभु राम का आवाहन किया। परन्तु यहां भी गच्चा खा गया। जय श्री राम पर तो दल विशेष को कॉपीराइट मिल चुका था। यह नारा लगाने वाला व्यक्तित्व किस दल का है, स्पष्ट हो जाता था।आदि कवि वाल्मीकि, तुलसीदास एवं राम का चरित्र गढ़ने वाले अन्य रचनाकार इस एक्ट से दूर कर दिये गए। अब...

" सिया राम मय सब जग जानी,
करहु प्रणाम जोरी युग पाणी। "

की अवधारणा तिरोहित होने लगी थी।जय श्री राम का नारा हर गलत कार्यो पर पर्दा डालने का काम करने लगा। तर्क ने मेरी आस्था की बुनियाद कमजोर करने का सिलसिला जारी रखा।आस्था पर करारी चोट अयोध्या में जय श्री राम वालों की करारी हार वह भी प्रभु राम के बजरंग बली वालों की भारी जीत ने तर्क और आस्था के बीच कमजोर होती जा रही ड़ोर तोड़ डाली। दूर कहीं से आवाज आई

"प्रभु तरु तर,कपि डार पर"।

नालंदा जिले के प्रमुख पर्यटक स्थल: एक परिचय

आदित्य शरण कौशलेश
सहायक पर्यवेक्षक

नालंदा जिला बिहार राज्य का एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर से समृद्ध क्षेत्र है। यह जिला प्राचीन काल से ही शिक्षा, बौद्ध धर्म और भारतीय संस्कृति का केंद्र रहा है। नालंदा का नाम सुनते ही विश्व प्रसिद्ध नालंदा विश्वविद्यालय की याद आती है, जिसने प्राचीन भारत को ज्ञान का प्रकाश दिया। इसके अतिरिक्त उदंतपुरी और तेल्हाड़ा में भी शिक्षा केंद्र / बौद्ध विहार थे। यहाँ कई ऐसे प्रमुख पर्यटन स्थल हैं जो ऐतिहासिक महत्व के साथ-साथ प्राकृतिक सुंदरता से भी परिपूर्ण हैं।

बिहारशरीफ:- यह नालंदा जिले का मुख्यालय शहर है। जो मगध साम्राज्य कि संस्कृति, मगही भाषा, खानपान और पहनावे को संरक्षित रखे हुये है। यहाँ कि बड़ी दरगाह पूरे भारत में प्रसिद्ध है। यहाँ महान सूफी संत हजरत मखदूम शेख शरफुद्दीन अहमद याहिया मनेरी रहमतुल्लाह अलैह की मजार है। हिन्दू मुस्लिम सभी लोग अपनी मन्नत लेकर उनके दरगाह पर आते हैं। इस शहर का पुराना नाम उदन्तपुरी भी था । यहाँ भी एक प्राचीन विश्वविद्यालय था । जिसकी स्थापना पाल राजाओं ने किया था ।

नालंदा विश्वविद्यालय के अवशेष:- नालंदा विश्वविद्यालय प्राचीन भारत का पहला आवासीय विश्वविद्यालय था, जिसकी स्थापना 5वीं शताब्दी में गुप्त वंश के शासकों ने की थी। यहाँ पर चीन, तिब्बत, जापान, कोरिया और दक्षिण-पूर्व एशिया से छात्र अध्ययन करने आते थे। इस विश्वविद्यालय में दस हजार से अधिक विद्यार्थी और दो हजार शिक्षक रहते थे। 12वीं शताब्दी में बख्तियार खिलजी ने इसे नष्ट कर दिया था। यदपि इस संबंध में कुछ इतिहासकारों का अलग मत है। आज भी इसके भव्य खंडहर पर्यटकों और इतिहास प्रेमियों को आकर्षित करते हैं।

नालंदा पुरातत्व संग्रहालय:- इस संग्रहालय की स्थापना 1917 में की गई थी। यहाँ नालंदा विश्वविद्यालय के अवशेषों से प्राप्त विभिन्न मूर्तियाँ, बर्तन, सिक्के और पांडुलिपियाँ संरक्षित हैं। संग्रहालय में बुद्ध और बोधिसत्व की दुर्लभ मूर्तियाँ देखने को मिलती हैं, जो नालंदा की सांस्कृतिक विरासत को दर्शाती हैं।

पावापुरी:- पावापुरी जैन धर्म के अनुयायियों के लिए एक पवित्र स्थल है। यहीं पर भगवान महावीर ने अंतिम उपदेश दिया और निर्वाण प्राप्त किया। पावापुरी का जल मंदिर एक सुंदर जलाशय के बीच स्थित है, जहाँ भगवान महावीर का अंतिम संस्कार हुआ था। यह स्थल अपनी अद्वितीय वास्तुकला और शांत वातावरण के लिए प्रसिद्ध है।

राजगीर:- राजगीर, नालंदा जिले का एक ऐतिहासिक और धार्मिक स्थल है, जो हिंदू, बौद्ध और जैन धर्म के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है। यहाँ भगवान बुद्ध और महावीर ने अपने उपदेश दिए थे।

- विष्णुपद मंदिर और सप्तपर्णी गुफाएँ धार्मिक महत्व रखती हैं।
- गृद्धकूट पर्वत बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए महत्वपूर्ण स्थान है जहाँ भगवान बुद्ध ने कई उपदेश दिए थे।
- गृद्धकूट पर्वत तक पहुँचने के लिए रोपवे का आनंद लिया जा सकता है। गर्म जलकुंड प्राकृतिक गर्म जलस्रोत,जिन्हें औषधीय गुणों से युक्त माना जाता है।

  वर्तमान में राजगीर सफारी, ग्लास ब्रिज और घोड़ा कटोरा यहाँ के अन्य लोकप्रिय स्थान बन गए है।

सूर्यमंदिर, बड़गाँव :- बड़गाँव का सूर्यमंदिर छठ पूजा के दौरान विशेष महत्व रखता है। यहाँ का सूरजकुंड एक पवित्र जलाशय है, जहाँ श्रद्धालु सूर्य

देवता की पूजा करते हैं।

औंगारी धाम:-बड़गाँव के सूर्यमंदिर की तरह ही यहाँ भी सूर्यमंदिर है। यहाँ भी छठ पूजा के दौरान विशेष भीड़ रहती है । छठ पुजा करने वाले दूर दूर से व्रती आते हैं।

ह्वेनसांग मेमोरियल हॉल :- चीनी बौद्ध भिक्षु ने नालंदा विश्वविद्यालय में 12 वर्षों तक अध्ययन किया और भारत के ऐतिहासिक व सांस्कृतिक विवरण को दुनिया के सामने प्रस्तुत किया। उनकी स्मृति में निर्मित यह हॉल नालंदा की वैश्विक ख्याति को दर्शाता है।

कुंडलपुरः- कुंडलपुर जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की जन्मस्थली मानी जाती है। यहाँ एक भव्य जैन मंदिर है, जो जैन अनुयायियों और पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है।

तेल्हाड़ा:- नालंदा जिले के एकंगरसराय प्रखण्ड स्थित तेल्हाड़ा या तेलहरा एक ऐतीहासिक स्थल है। यह नालंदा जिले के मुख्यालय बिहारशरीफ से लगभग 35 किलोमीटर पश्चिम स्थित है। यहाँ हुये खुदाई में विश्वविद्यालय का अवशेष प्रकट हुआ है। अनेक इतिहासकर इसे नालंदा और विक्रमशिला विश्वविद्यालय से भी प्राचीन मानते हैं। खुदाई में मिले चार चारकोलो की जांच लंदन और लखनऊ के प्रयोगशाला में कार्बन डेटिंग से प्रकट हुआ कि ये अवशेष छठ्ठी से बारहवीं सदी के बीच के थे।

नालंदा जिला अपने ऐतिहासिक, शैक्षिक और धार्मिक महत्व के कारण न केवल भारत बल्कि पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। नालंदा विश्वविद्यालय के प्राचीन खंडहर, पावापुरी का शांत जल मंदिर, राजगीर की प्राकृतिक सुंदरता और ह्वेनसांग मेमोरियल हॉल जैसे स्थल इतिहास, धर्म संस्कृति, शिक्षा के अद्वितीय संगम को दर्शाते हैं।

गंगा के दियारा क्षेत्र के विकास और उपयोग की संभावना

भूषण प्रसाद
सहायक पर्यवेक्षक

गंगा नदी बिहार में गंगा चौसा से प्रवेश करती है। गंगा नदी बिहार के 12 जिलों से गुजरती है । ये जिले बक्सर, भोजपुर, सारण, पटना, वैशाली, समस्तीपुर, बेगूसराय, मुंगेर, खगड़िया, कटिहार, भागलपुर और लखीसराय हैं। गंगा नदी की कुल लंबाई लगभग 2500 किलोमीटर है, जिसमें से 445 किलोमीटर बिहार में है। गंगा नदी की घुमावदार गति के कारण इसकी धाराएँ कई जिलों में बदलती रहती है। इस कारण से कई जिलों में बरसात को छोडकर गरमी और जाड़ों में हजारों वर्ग किलोमीटर सूखी जमीन निकल आती है, जिसे सामान्य तौर पर दियारा क्षेत्र कहा जाता है। नदी के किनारे की वह जमीन जो नदी के हट जाने पर निकल आती है, उसे दियारा कहते हैं. इसे कछार, खादर, दरिया बरार इत्यादि भी कहा जाता है.

इस बड़े भूभाग का समुचित उपयोग किए जाने से बिहार राज्य को आर्थिक रूप से मजबूती दी जा सकती है। राज्य के बेरोजगारी को दूर कर पलायन को रोका जा सकता है।

जैविक खेती:- गंगा द्वारा लाई गई दियारा क्षेत्र की उपजाऊ मिट्टी जैविक खेती के लिए आदर्श हो सकती है। रासायनिक खादों के बजाय प्राकृतिक खादों का उपयोग मिट्टी की उर्वरता बनाए रखेगा। इस मिट्टी में उपजने वाली सब्जी, अन्न अधिक स्वास्थ्यवर्धक होगा। नदी के किनारे खीरा, खरबूज, परवल, तरबूज और लौकी की खेती दिसंबर से जून के दौरान की जाती है। वर्तमान समय में जैविक सब्जियों की शहरों में अधिक मांग है।

मौसमी और बाढ़-प्रतिरोधी फसलें:-
जल-प्रभावित क्षेत्रों में जलकुंभी, सिंघाड़ा और मखाना जैसी जलीय फसलें भी लाभकारी हो सकती हैं। खरीफ और रबी दोनों मौसमों में खेती के लिए फसल चक्र अपनाया जाए।

खरीफ की फसलें:- बाढ़ का पानी उतरने के बाद खरीफ सीजन की फसलें उगाई जाती हैं, जिनमें मुख्यत: धान, मक्का, और बाजरा शामिल हैं। बाढ़ की वजह से मिट्टी में नमी रहती है, जो खरीफ फसलों के लिए उपयुक्त होती है।
रबी की फसलें:- रबी सीजन में गेहूँ, जौ, सरसों, और दलहन जैसी फसलें उगाई जाती हैं। रबी की फसलें आमतौर पर ठंड के मौसम में होती हैं और बाढ़ का पानी उतरने के बाद जब मिट्टी कुछ हद तक सूख जाती है, तब ये फसलें बोई जाती हैं।
औषधीय पौधा:-तुलसी, मेंथा, अश्वगंधा और एलोवेरा जैसी औषधीय फसलें उगाकर अच्छी आय अर्जित की जा सकती है।
मछली पालन :- बाढ़ के पानी का उपयोग मत्स्य पालन के लिए किया जा सकता है। तालाब और कृत्रिम जलाशय बनाकर व्यवस्थित मत्स्य पालन को बढ़ावा दिया जा सकता है।
मोती उत्पादन:- घोंघे की खेती (मोती पालन) एक उभरता हुआ क्षेत्र है, जिसे यहाँ बढ़ावा दिया जा सकता है।
पशुपालन और डेयरी उद्योग:- गाय, भैंस, बकरी पालन दियारा क्षेत्र में हरा चारा प्रचुर मात्र में उपलब्ध होने के कारण डेयरी फार्मिंग क अच्छा विकल्प हो सकता है। बकरी पालन और मुर्गी पालन से भी स्थानीय लोगों को आर्थिक लाभ मिलेगा।
मधुमक्खी पालन और फूलों की खेती :- फूलों और वनस्पतियों की प्रचुरता के कारण मधुमक्खी पालन से शहद उत्पादन किया जा सकता है। फूलों का उपयोग मंदिरों और सजावट कार्य में काफी होती है ।
पर्यावरण अनुकूल पर्यटन:-
बर्ड वॉचिंग, नेचर ट्रेल्स, और इको-रिसोर्ट जैसी

परियोजनाएँ चलाई जा सकती हैं। नाव पर्यटन जैसी गतिविधियाँ पर्यटन को बढ़ावा देंगी।
सौर ऊर्जा फार्मः– बंजर भूमि या कम उपयोगी क्षेत्रों में सौर पैनल स्थापित कर अक्षय ऊर्जा का उत्पादन किया जा सकता है।
सड़क और परिवहन सुधारः– दियारा क्षेत्रों को मुख्य भूमि से जोड़ने के लिए पुल और सड़क नेटवर्क को विकसित किये जाने की आवश्यकता है।
सहकारी समितियों की स्थापनाः– किसानों, मछुआरों और पशुपालकों के लिए सहकारी समितियाँ बनाकर उनके उत्पादों को बाजार तक पहुँचाया जाना चाहिए।
इस तरह गंगा के दियारा क्षेत्र का विकास बहुआयामी तरीके से किया जा सकता है, जिसमें कृषि, पशुपालन, मत्स्य पालन, पर्यटन, ऊर्जा उत्पादन और पर्यावरण संरक्षण की रणनीतियाँ अपनाई जाएँ। यह न केवल स्थानीय लोगों के लिए रोजगार उत्पन्न करेगा, बल्कि बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों की समृद्धि में भी योगदान देगा।

संदर्भ 1 https://agrostar-in
2 https://www-krishakjagat-org

व्यंग्य कविता

कास्टिज्म अपनाना चाहता हूँ

दिलीप कुमार अरोड़ा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

मैं चाहता हूँ कास्टिज्म अपनाना,
पर जब ढूँढ़ता हूँ असमानता।
सिर्फ समानता पाता हूँ।।
खाना वही से, त्यागना वही से,
वही दो हाथ, वही दो पैर,
जीवन-मरण की विधि समान
असमानता मिली तो सिर्फ,
अपने वश की चीजों में।
चाहे वो हो मूँछ -दाढ़ी,
वेश -भूषा या खान-पान।।
देख कर मेरी उधेड़ बुन,
मन से एक आवाज आई।
समाज बँटा है, टुकड़ों में,
तू रहता है क्यों अलग-थलग
बचा है अभी भी नाखून,

अपना ले इसे, बना लें अपनी कास्ट
जन्मदाता कहलायेगा तु
नेता होंगे तेरे पीछे
तेरी कास्ट का वोट पाने को
मर मिटेंगे लोग, तेरे इस नाखून पर
वे काटते थे रोज जिसे
सुन कर मन के ये दुर्विचार,
छोड़ दिया मैंने अपना ये विचार।
बँटा रहने दो ये संसार,
कभी तो आएगा उनको ये सुविचार।

बढ़ता बचपन

श्रीमती दिव्या नाथ

बढ़ता बचपन खिलता बचपन,
गिरता और संभलता बचपन।
स्नेही अधरों की हंसी तो,
कभी जिद पर अड़ता बचपन।।
पापा के कंधे पर चढ़ता,
दुनिया देख मचलता बचपन।
छोटी सी बातों पर रूठा,
और फिर मनाता बचपन।।
दादी की आखों का चश्मा,
और दादा की लाठी बचपन।
ऊंच-नीच की बातों सें हटकर,
सबसे लाड़-लगाता बचपन।।
बारिश की पानी में खेले,
कीचड़ में यूं बढ़ता बचपन।
डांट लगी तो रोता यूं,
दुलार देख मुस्काता बचपन।।
ऊगते सूर्य की रश्मि मोहक,
वैसे चंद्र सा उज्ज्वल बचपन।
सरलता की पायल को बांधे,
चारों ओर थिरकता बचपन।।

द्वारा सुभाष वर्मा
व.ले.प.अ.

ध्वस्त पुल

राजू कुमार सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

बहती नदी की शांति
और मेरा शांत मन,
सुन रहे थे उभय
नदी तट की बातें
"पुल के गिरने से
बढ़ गई हमारी दूरियाँ,
छिन गया है संवाद,
और लग गया है
विकास पर प्रश्न चिह्न।

इस पुल के निर्माण से पूर्व
नाव का सहारा था,
उभय तट के कुशल तैराक
तैरकर पार उतरते थे,
कालांतर मे निर्मित चचरी पुल
दोनों किनारों को जोड़ता था।

यह ध्वस्त कंक्रीट पुल
चिरलंबित मांग का परिणाम था,
उद्‌घाटन पर आए थे
बड़े-बड़े नेता और अधिकारी,
आया था गाड़ियों का काफिला
असमय काल कवलित यह पुल
लगा गया नदी पर लांछन,
तंत्र का खोखलापन छिप गया
नदी के बरसाती उफान में
और सरकारी जांच के पन्नों में
जुड़ गई एक नयी कहानी।"

ऊपर नीला आसमान
नीचे अथाह गहराई के मध्य,
उदास होकर बहती नदी
फासले महसूस करती है:
वह चाहती है इंसाफ
ध्वस्त पुल के ठेकेदारों से।

इस बीच मुखरित हो गयी
नदी के सिसकने की पीड़ा:
मैं खड़ा था किनारे पर
मेरा दिल भी सिसक रहा था।

बिहारी शादी की रस्मों के निहितार्थ

राजू कुमार सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

विवाह का मतलब है विशिष्टता। विवाह में आनंद और हर्ष के साथ वहन करने का कर्तव्य भी जुड़ जाता है। विवाह को वैवाहिक बंधन भी कहा जाता है।विवाह के जरिए जीवनसाथी के साथ सांस्कृतिक और कानूनी रूप से मान्यता प्राप्त मिलन होता है। विवाह के जरिए जीवनसाथी के साथ-साथ उनके और उनके बच्चों के बीच और उनके और उनके ससुराल वालों के बीच अधिकारों और दायित्वों की स्थापना होती है। अलग-अलग जातियों में ही नहीं वरन राज्य बदलते ही शादी के रीति रिवाज और रस्म बदल जाते हैं । बिना रस्मों रिवाज के भला कोई हिन्दू शादी पूरी हो सकती है क्या? आज हम आपको बिहारी शादी में निभाई जाने वाली कुछ खास रस्मों के बारे मे बताएँगे। बिहार न सिर्फ अपनी बोली-भाषा और खानपान के लिए मशहूर है बल्कि यह राज्य अपनी संस्कृति और रीति रिवाजों के लिए भी जाना जाता है। तो आइए जान लेते हैं, उन रस्मों के बारे मे जो बिहारी शादी में खास हैं। एक बिहारी विवाह, बिहार में एक पारंपरिक विवाह उत्सव है और यह उन रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक प्रथाओं में डूबा हुआ है जो पीढ़ियों से चले आ रहे हैं। बिहारी शादियों को उनके भव्यता, विस्तृत तैयारियों और जीवंत सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए जाना जाता है। यह परिवारों के एक साथ आने और शादी में दो लोगों के मिलन का जश्न मनाने का समय है। एक बिहारी शादी प्यार, प्रतिबद्धता और दो परिवारों के बीच के बंधन का उत्सव है। यह आनंद, हंसी और यादों का समय होता है जो जीवन भर के लिए यादगार हो जाता है। शादी बिहार की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाती है और बिहारी समाज में परिवार और समुदाय के महत्व का एक वसीयतनामा है। बिहारी शादी की पोशाक मनमोहक होती है और बिहारी शादी की रस्में अत्यधिक लोकप्रिय होती हैं।

शादी से पहले की रस्में:-

बिहारी शादी में शादी से पहले की रस्में गणेश पूजा से शुरू होती हैं। जहां विघ्नहर्ता या गणेश जी की पूजा शादी मे बाधाओं, रुकावटों और अशुभता को दूर करने के लिए की जाती है। अगली रस्म 'जयमाला' रस्म है, जहां दूल्हा और दुल्हन फूलों की माला का आदान-प्रदान करते हैं। 'सगाई' समारोह एक महत्वपूर्ण पूर्व-विवाह अनुष्ठान है। जहां दूल्हा और दुल्हन के परिवार सगाई की अंगूठी का आदान-प्रदान करने के लिए एक साथ आते हैं। इसके बाद 'मेहंदी' समारोह होता है। जहां दुल्हन के हाथों और पैरों पर मेहंदी के सुंदर डिजाइन लगाए जाते हैं।

सत्यनारायण कथा - सत्यनारायण कथा, या पूजा, भगवान विष्णु के सम्मान में परिवारों द्वारा किया जाने वाला एक हिंदू धार्मिक अनुष्ठान है। बिहारी विवाह में, यह पूजा अक्सर विवाह समारोह के दौरान भगवान विष्णु से आशीर्वाद लेने के लिए की जाती है। कथा में भजन और प्रार्थना करना, देवता को फूल और भोग चढ़ाना और राक्षस बाली पर भगवान विष्णु की विजय की कहानी का पाठ करना शामिल है।

छेका समारोह - पारंपरिक बिहारी शादियों में, छेका समारोह हिंदू संस्कृति और परंपराओं में रोका समारोह के समान है। छेका समारोह में, दूल्हा और दुल्हन के परिवार उपहारों का आदान-प्रदान करने और जोड़े को आशीर्वाद देने के लिए एक साथ आते हैं। बिहारी शादी की रस्मों में, छेका समारोह दूल्हा और दुल्हन के बीच के रिश्ते को निभाने का एक तरीका है।

तिलक समारोह - तिलक समारोह बिहार में एक महत्वपूर्ण विवाह-पूर्व अनुष्ठान है। यह शादी के दिन से कुछ दिन पहले किया जाता है। इस रस्म के

दौरान, दुल्हन का भाई अपने बहनोई को तिलक लगाकर परिवार के अपने पक्ष में उसका स्वागत करता है।

हल्दी की रस्म - हल्दी की रस्म बिहारी शादी का एक अभिन्न अंग है। यह रस्म दूल्हा और दुल्हन के घरों में अलग-अलग होती है। कहा जाता है कि हल्दी की रस्म के बाद दूल्हा और दुल्हन सबसे अधिक दीप्तिमान होते हैं और कहा जाता है कि हल्दी के लेप से उनकी सुंदरता और बढ़ जाती है। हल्दी की रस्म अच्छी किस्मत लाने, बुराई को दूर करने और एक सहज और सामंजस्य पूर्ण वैवाहिक जीवन सुनिश्चित करने के लिए की जाती है। वर-वधू के हाथ पीले होना जीवन में अतिरिक्त जिम्मेदारी के बढ़ने का द्योतक है। हल्दी एंटीसेप्टिक का भी काम करता है जिससे किसी त्वचा रोग से भी बचाव होता है।

मटकोर - हल्दी वाले दिन औरतें एक खाली मैदान में जाती हैं जिसमें कुदाल की पूजा होती है और उससे मिट्टी खोदी जाती है। गड्ढे में पानी डालकर समुद्र रूप में उसकी पूजा की जाती है। मिट्टी को दौरे (टोकरे) में डालकर घर लाया जाता है। मिट्टी यानि माँ जिसकी कोख में निर्माण होता है उसकी पूजा होती है। मिट्टी से अपनी कर्तव्यनिष्ठा भी जुड़ी होती है।

मंडपाच्छादन - मंडपाच्छादन का अर्थ है मंडप को तैयार कर सजाया जाना। एक पारंपरिक बिहारी शादी में, मंडप, जहां फेरे और कन्यादान जैसी शादी के विधि विधान सम्पन्न होते हैं, में सामान्यत: बांस के पाँच खंभे होते हैं। बांस वंश वृद्धि का प्रतीक है। ये पाँच खंभे पंच महाभूत -अग्नि, जल, वायु, गगन और पृथ्वी के प्रतीक हैं। चारों कोनों के चार खंभे जीवन के चार आश्रमों- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास-के सूचक होते हैं। मंडप में प्रवेश के समय दूल्हा ब्रह्मचर्य जीवन का पालन कर रहा होता है और मंडप से निकलते समय वह गृहस्थ जीवन मे प्रवेश करता है।

मंडप में कई चीजें रखी हुई मिल जाती हैं जिनके अलग-अलग मायने हैं जैसे ओखल और मूसल संतानोत्पति की क्रिया का, सील और लोढ़ा पर्वत समान समस्याओं के निवारण को चक्की जीवन में कील रूपी भरोसे को और तोता मिर्ची खाने के बाद भी मीठे बोल के महत्व को दर्शाते हैं ।

मेहँदी - यह रस्म शादी के एक दिन पहले होती है। इसे अलग-अलग परिवारों के अलग-अलग रीति - रिवाजों के अनुसार गीत-नृत्य के साथ पूरा किया जाता है। दुल्हन के हाथों में लगने वाली मेहँदी जीवन में परोपकार और पुरुषार्थ के महत्व को बताती है। रहीम कवि ने लिखा भी है:

वे रहीम नर धन्य हैं, पर उपकारी अंग।
बांटन वारे को लगे, ज्यों मेहँदी को रंग।।

इसके साथ ही मेहँदी सौभाग्य, दाम्पत्य जीवन की खुशी, प्यार और आशीर्वाद का प्रतीक है। ऐसा माना जाता है कि यह दूल्हा-दुल्हन को नकारात्मक शक्ति से बचाने और उनके नए जीवन में सकारात्मक ऊर्जा को भरने का काम करता है। मेहँदी प्राकृतिक रूप से ठंडा होता है जिसके कारण इसे हाथों और पैरों में लगाने से तनाव और घबराहट कम करने में मदद मिलती है।

धृतढ़ारी और मातृपूजा- बिहारी विवाह में यह रस्म दोनों पक्षों के पूर्वजों को समर्पित है। सबसे पहले, दोनों जोड़ों के माता-पिता अपने पूर्वजों को समर्पित एक छोटी सी पूजा आयोजित करते हैं जिसमें जोड़े और उनके परिवार के लिए आशीर्वाद मांगा जाता है। फिर पूजा के बाद परिवार के बुजुर्ग सदस्यों को कपड़े और पैसे या भोजन का भोग लगाया जाता है।

इमली घुटाई - बारात निकलने से पहले इमली घुटाई समारोह में, माँ दूल्हे को आशीर्वाद देती है कि दुनिया का हर दुखः मेरा और हर सुख तेरा। दुल्हे का मामा द्वारा आम के हाथ पर उझलता है। मामा दुल्हे को बुरी आदतों से दूर रहने की सलाह देते है क्योंकि वह अपने जीवन में नया अध्याय शुरू करता है।

शादी के दिन की रस्में :-बारात के

आने के साथ ही शादी के शुभ दिन की शुरुआत हो जाती है। बारात में दूल्हा घोड़े पर या एक सुंदर सजी हुई कार पर आता है। फिर, दुल्हन का परिवार एक 'आरती' के साथ उनका स्वागत करता है, जो एक पवित्र प्रकाश समारोह है।अगली रस्म 'कन्यादान' है, जहां दुल्हन के पिता दूल्हे को शादी में हाथ बंटाते हैं। इसके बाद 'सात फेरे' होते है। जहां दूल्हा और दुल्हन अमीरी या गरीबी के लिए बीमारी या स्वास्थ्य में एक दूसरे के साथ रहने का वादा करते हुए सात वचन लेते हैं।

कोहरात या कुमारपत का भात - शादी वाले दिन आँगन में मिट्टी के चूल्हे पर मामा के घर से आए चावल से भात बनाया जाता है। भात में दही मिलाकर लड़का और लड़की को खिलाया जाता है। दही शुभ का संकेत है और घर की पहली लक्ष्मी यानि माँ के मायके (जो मंदिर है) से आया चावल प्रसाद समान होता है।

बारात स्थान - दूल्हा अपनी बारात के साथ विवाह स्थल पर आता है, जिसे बारात कहा जाता है। यह संगीत और नृत्य के साथ होता है, जिसमें दूल्हा घोड़े की सवारी करता है या सुन्दर रूप से सजाया गया वाहन होता है। इसके अलावा, यह एक जीवंत और रंगीन बारात है, जो शादी के समग्र माहौल में चार चांद लगाती है।

जयमाला -जयमाला समारोह स्वीकृति का प्रतीक है और यहीं पर दूल्हा और दुल्हन फूलों की माला का आदान-प्रदान करते हैं और अपने मिलन को मजबूत करते हैं। वे झुककर एक दूसरे को स्वीकार करते हैं।

गुरहथी या निरीक्षण - मंडप मे इस रस्म के समय दूल्हा नहीं रहता है और दूल्हे का बड़ा भाई या घर के बुजुर्ग एक धागा, जिसे ताग कहा जाता है, के साथ अन्य आभूषण और पाट यानी साड़ी उपहार के रूप में भेंट करता है। धागा एक जवाहरात के रूप में भेंट करते समय यह रक्षा सूत्र का प्रतीक है कि दूल्हा की अनुपस्थिति में दुल्हन की रक्षा उसका बड़ा भाई करेगा।

दूल्हे द्वारा दुल्हन का पैर छूना - मंडप में इस रस्म में दुल्हन अपने पैर का अंगूठा सिलबटे पर रखती है और दूल्हा अपनी उँगलियों से उसे हटाता है। यह पति के समर्पण को दर्शाता है और दुल्हन को आश्वस्त करता है कि उसके जीवन में उसका महत्व सबसे ऊपर है क्योंकि दुल्हन अपना घर छोडकर दूल्हे के घर जा रही है।

कन्यादान - कन्यादान दुल्हन के पिता द्वारा किया जाने वाला एक अनुष्ठान है जहां वह अधिकारिक रूप से दूल्हे के लिए अपनी बेटी के रक्षक और प्रदाता के रूप में अपने कर्तव्य को बदल देता है। कन्यादान के दौरान, दुल्हन का पिता अपनी बेटी को दूल्हे को विदा करता है और उसे उसका रक्षक बनने के लिए कहता है।

फेरा - मंडप में फेरे के समय दुल्हन के हाथ में बांस का सूप रहता है और दूल्हा पीछे से दुल्हन और सूप को पकड़ता है। दुल्हन का भाई धान का लावा सूप पर डालता है। दूल्हा-दुल्हन धान का लावा छींटते हुये फेरे लेते हैं। यहाँ धान दुल्हन का प्रतीक है क्योंकि जिस तरह धान दो जगह उगाया जाता है दुल्हन भी मायके से ससुराल जाती है। जिस तरह धान की भूसी और लावा अलग नहीं होते, दूल्हा और दुल्हन जीवनपर्यन्त एक साथ रहेंगे।

सिंदूरदान - सिंदूरदान विवाह की सबसे महत्वपूर्ण रस्म मानी जाती है। शादी के मंडप में दूल्हा पहली बार दुल्हन की मांग मे सिंदूर लगाता है। बाद में नाक से सिंदूर लगाया जाता है। नाक का प्रतिष्ठा से संबंध है और नाक से सिंदूर लगाने का अर्थ है विवाहित महिला अपने पति का सम्मान करती है और लंबी सिंदूर रेखा पति की लंबी आयु का प्रतीक है।

गाली देने की परंपरा - विवाह मंडप में लड़की पक्ष की महिलाएं बरातियों कों खाने के समय पुरुष और महिला का नाम लेकर गाली देती हैं। यह सोशल इंजीनीयरिंग का उदाहरण है जिसमें दहेज देनेवाला लड़की पक्ष वर पक्ष को गाली सुनाता है। यह सहनशीलता की सीख देता है जो पारिवारिक जीवन का आधार भी है। सहनशीलता के अभाव मे

हम कई शादियाँ टूटते हुये देखा गया हैं।

शादी के बाद की रस्में:-

शादी के बाद युगल दंपति सभी बड़ों का आशीर्वाद लेते हैं और आगे के विधि-विधान के लिए कोहबर घर मे प्रवेश करते हैं। यह विधि विदाई के पश्चात लड़के वालों के घर मे भी आयोजित की जाती है। विदाई के पश्चात दुल्हन के ससुराल में दौरा में डेग डालने, मुंह देखाई (आजकल रिसेप्सन), चौठारी, चौका छुलाई जैसे रस्मे सम्पन्न होती हैं।

कोहबर – कोहबर में चित्रकला का प्रदर्शन होता है जिसे चावल के रंग से बनाया जाता है। कोहबर घर में दीवार पर कमल और मोर के चित्र बनाए जाते हैं, दीप जलाया जाता है और पान व नारियल से कुलदेवता की पूजा की जाती है। कमल और मोर शांति के प्रतीक हैं, दीप रोशनी का प्रतीक है और पान व नारियल देवताओं के आशीर्वाद को सूचित करते हैं। इसी आशीर्वाद के बाद जीवन की शुरुआत होती है।

विदाई के समय धान पीछे फेंकना - जब दुल्हन की आधिकारिक तौर पर शादी हो चुकी है और वह अपने जीवन में एक नई यात्रा शुरू करने के लिए अपने माता-पिता का घर छोड़ने के लिए तैयार है, तो यह विदाई जैसी रस्मों का समय है। मायके से विदाई के समय दुल्हन धान को पीछे फेंकती है। यहाँ धान समृद्धि का प्रतीक है और बेटी लक्ष्मी का प्रतीक। बेटी का संदेश है कि मैं इस घर से जा रही हूँ परंतु इस घर की समृद्धि, सुख और वैभव मेरे जाने के बाद भी बनी रहे।

दौरा में डेग- दुल्हन की विदाई के पश्चात दूल्हे के घर में प्रवेश के पूर्व दौरा में डेग वाली रस्म होती है। इसमे दूल्हा और दुल्हन जमीन पर पैर नहीं रखते हैं वरन बांस के दौरे में पैर रखते हुये घर में प्रवेश करते हैं। इसका अर्थ है कि हम दोनों ताउम्र साथ चलेंगे। बांस लंबी उम्र का प्रतीक है और इसमें झुककर उठने की भी क्षमता होती है। यह रस्म के माध्यम से दूल्हा दुल्हन यह संकल्प लेते हैं कि जीवन में कितनी भी विपदा आए, हम एक नई शुरुआत करेंगे और हर विपदा के बाद स्वयं को पुन स्थापित करेंगे।

चौका छुलाई-समान्यत: शादी के चौथे दिन नवविवाहित दुल्हन को अपने पति के यहां पहली बार खाना बनाना होता है। ज्यादातर परिवारों में दुल्हन कुछ मीठा बनाती है जिसे शुभ माना जाता है और जीवन में मिठास का सूचक है। एक बार जब भोजन तैयार हो जाता है, तो परिवार के सभी सदस्य दुल्हन द्वारा बनाये गए व्यंजन का स्वाद चखते हैं। फिर परिवार के बडे सदस्य जैसे सास और ससुर, जेठ -जेठानी दुल्हन को रस्म के तौर पर शगुन रूप में उपहार भी देते हैं। इस तरह दुल्हन घर की जिम्मेदारियों का वहन कर लेती है।

उपरोक्त वर्णन में मैंने बिहारी शादी में निभाई जाने वाली रस्मों के पीछे छुपे हुए अर्थ को तलाशने का प्रयास किया है। इस आलेख में कई स्थानीय और छोटी-छोटी रस्मों का उल्लेख नहीं भी हो पाया होगा, परंतु यह तय है की बिहारी शादियों के रस्म हमें गृहस्थ जीवन की बारीकियों से परिचित कराते हैं। उम्मीद है, इस आलेख को पढ़ने के बाद आपलोग किसी शादी में होने वाले विधि-विधान का भली भांति आनंद ले पाएंगे।

नैनीताल की यात्रा- एक यादगार पल

अनुप्रिया सिंह

मैं पटना विमेंस कॉलेज के भूगोल संकाय से स्नातक पाठ्यक्रम के अंतिम वर्ष की छात्रा हूँ। हमारे कॉलेज में प्रत्येंक वर्ष एक शैक्षणिक यात्रा का आयोजन किया जाता रहा है। इस बार हम लोगों की मंजिल थी " नैनीताल कौसानी " नैनीताल जिसे झीलों का शहर कहा जाता है और कौसानी जिसे भारत का स्विट्जरलैंड कहा जाता है। न केवल अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए है, बल्कि अध्ययन-अध्यापन के लिए भी एक आदर्श स्थान है।

हम लोगों का यह पांच दिवसीय शैक्षणिक यात्रा कार्यक्रम था। हम लोगों का पहला ठहराव था "कौसानी"जहां पहुंचने के बाद हम लोग सबसे पहले गांधी जी के अनासक्ति आश्रम गए वहां से लौटने तक रात्रि हो चुकी थी, तो हम लोगों ने बोन-फायर जलाकर ढेर सारी मस्ती की, हम यात्रा के दूसरे दिन सबसे पहले रानीखेत गए। उसके बाद मां कालिका देवी मंदिर गए जो की मां काली का बहुत पुराना और भव्य मंदिर है। उसके पश्चात हम लोग कैंची धाम गए और फिर रास्तें में बागान देखा। वहां हम लोगों नें जैविक चाय के पत्तियों की खेती भी देखी। दिन के अंत में हम गोल देवता के मंदिर भी गए, जिन्हें उत्तराखंड के लोग देवताओं का हाईकोर्ट भी बोलते हैं।

अगले दिन हमारी नैनीताल के सफर की शुरूआत हुई जहां हमने रास्तें में भीमताल झील को देखा और शाम में हम पहुंचे नैनीताल जहाँ सबसे सुंदर दृश्य देखने को मिला। नैनी झील की सर्द हवा पहाड़ों से घिरी झील और ढेर सारे लोग से मॉल रोड की हलचल रोमांचित कर रही थी।

अगले दिन हमने अपनी सफर की शुरूआत की नैनी देवी मंदिर से जो मान्यताओं के अनुसार 51 शक्ति पीठों में से एक है। यह मंदिर काफी खुबसूरत है और नैनी झील के किनारे स्थित है। नैनीताल एक ऐसी जगह है जहाँ चारो प्रमुख धर्म के धार्मिक स्थल अगल-बगल में ही स्थापित है। इसके बाद हम लोगों ने नैनी झील में वोटींग भी की। फिर वहां के बाद हम लोग "वुडलैंड वॉटरफाल" भी गए जहां सिर्फ पानी की आवाज ही गुंजायमान थी। यह दृश्य अपने आप में मनोरम था। उसके बाद हम लोग "मैंगों ब्यू पॉइंट" गए। जहाँ से नैनी झील " आम के आकार " का लगता है। हम लोग सेंट जोसेंफ कॉलेज गए। जहॉ " कोई मिल गया" फिल्म की शूटिंग हुई थी। शाम को निकल पडे हम मॉल रोड घूमने दोस्तों के संग जहां से हमने अ प न घर वालों और दोस्तों के लिए यादगार के तौर पर ढेर सारी आवश्यकता की सामग्री खरीदी और पहाडों की मैगी, मोमोज और चाय का आनंद भी लिया। इसके कल होकर हम लोग अपने-अपने घर लौट आए। इन्ही यादगार पलों के साथ ही नैनीताल का सफर वहीं की खट्टी मिठ्ठी यादें पहाड़ हरे-भरे रोड, सर्द हवा वाली वादियां जो हम लोगों के दिल के एक कोने में अच्छी यादें बनकर रहेंगी।

द्वारा- अमित कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

लेखापरीक्षा सप्ताह 2024

शालीग्रामी गोल्ड कप फुटबॉल ट्रॉफी 2025 की विजेता टीम